संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

मासिक पत्रिका

मूल्य : ₹ ६
भाषा : हिन्दी
प्रकाशन दिनांक : १ दिसम्बर २०१४
वर्ष : २४ अंक : ६
(निरंतर अंक : २६४)

राष्ट्रहित में क्रांतिकारी पहल करनेवाली सुप्रतिष्ठित हस्तियों को फँसाने के लिए राष्ट्र-विरोधी ताकतों द्वारा बलात्कार-विरोधी कानूनों का दुरुपयोग हो रहा है। पूज्य बापूजी को एक अंतर्राष्ट्रीय षड्यंत्र के तहत जेल भेजा गया है। निर्दोष आम लोग भी बड़े पैमाने पर इन कानूनों के शिकार बन रहे हैं। अब इन कानूनों में संशोधन के लिए समाज में आवाज उठने लगी है।

पूज्य संत श्री आशारामजी बापू

Law

No Rape In FIR Still No Bail

Fake Incident, Fake Story, Fake Age And Fake Allegations

विशाल नारी-शक्ति मार्च

महिला आंदोलन

करोड़ों महिलाओं को न्याय कौन देगा ?

"जबरन किसी पर लगाया गया रेप का (झूठा) आरोप भी रेप जितना ही गम्भीर अपराध है।" - इलाहाबाद उच्च न्यायालय

"नये बलात्कार विरोधी कानूनों में कुछ ऐसे संशोधन हैं जो कि जरूरत से ज्यादा कठोर, बेरहम हैं।" - न्यायमूर्ति श्रीकृष्णा, पूर्व न्यायाधीश, सर्वोच्च न्यायालय

"नये बलात्कार निरोधक कानूनों की समीक्षा की आवश्यकता है। इनका दुरुपयोग रोकने के लिए संशोधन जरूरी है।" - श्री आर.डी. शुक्ला, सेवानिवृत्त न्यायाधीश मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय व पूर्व अध्यक्ष, मानवाधिकार आयोग

"इन दिनों बलात्कार या यौन-शोषण के झूठे मुकदमे दर्ज कराने का ट्रेंड बढ़ता जा रहा है, जो चिंताजनक है। इस तरह के चलन को रोकना बेहद जरूरी है।" - न्यायाधीश निवेदिता अनिल शर्मा, फास्ट ट्रैक कोर्ट, दिल्ली

"केन्द्र सरकार बलात्कार निरोधक कानून में जरूरी संशोधन करे।" - अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश वीरेन्द्र भट्ट, फास्ट ट्रैक कोर्ट, दिल्ली

समाज में सुख-शांति, समृद्धि, आरोग्यता का संवर्धन करने के लिए 'ऋषि प्रसाद सम्मेलन' में सहभागी होते हुए हजारों गुरुभक्त, संस्कृतिप्रेमी व राष्ट्रप्रेमी

अपने सद्गुरु की प्रेरणा से समाजरूपी ईश्वर की सेवा में लगे हुए साधक-साधिकाओं द्वारा सर्दी के कपड़े, कम्बल एवं अन्य जीवनोपयोगी सामग्री का वितरण व भंडारा ।

सोमनहल्ली-बेंगलोर

धरमपुर, जि. वलसाड (गुज.)

गुर्रेवुला, जि वारांगल (तेलंगाना)

भावनगर (गुज.)

खुर्दा (ओड़िशा)

हैदराबाद

भांडुप-मुंबई

जयपट्ना (ओड़िशा)

अनगुल (ओड़िशा)

महिला उत्थान मंडल द्वारा आयोजित सर्वांगीण विकास शिविर

जोधपुर आश्रम में जपमाला-पूजन

ऋषि प्रसाद

हिन्दी, गुजराती, मराठी, उड़िया, तेलुगू, कन्नड़, अंग्रेजी, सिंधी, सिंधी देवनागरी व बंगाली भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : २४ अंक : ६
भाषा : हिन्दी (निरंतर अंक : २६४)
प्रकाशन दिनांक : १ दिसम्बर २०१४
मूल्य : ₹ ६
मार्गशीर्ष-पौषवि.सं. २०७१

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक और मुद्रक :
श्री कौशिकभाई पो. वाणी
सम्पादक : श्री कौशिकभाई पो. वाणी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे. खो. मकवाणा, श्रीनिवास
संरक्षक : श्री जमनालाल हलाटवाला
प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद -३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैन्युफैक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.) - १७३०२५.

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित)

भारत में
(१) वार्षिक : ₹ ६०/-
(२) द्विवार्षिक : ₹ १००/-
(३) पंचवार्षिक : ₹ २२५/-
(४) आजीवन : ₹ ५००/-

नेपाल, भूटान व पाकिस्तान में (सभी भाषाएँ)
(१) वार्षिक : ₹ ३००/-
(२) द्विवार्षिक : ₹ ६००/-
(३) पंचवार्षिक : ₹ १५००/-

अन्य देशों में
(१) वार्षिक : US $ २०
(२) द्विवार्षिक : US $ ४०
(३) पंचवार्षिक : US $ ८०

ऋषि प्रसाद (अंग्रेजी)

	वार्षिक	द्विवार्षिक	पंचवार्षिक
भारत में	७०	१३५	३२५
अन्य देशों में	US $ 20	US $ 40	US $ 80

सम्पर्क

'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.).
फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ३९८७७७८८.
e-mail: ashramindia@ashram.org
web-site: www.rishiprasad.org
www. ashram.org

ॐ ॐ इस अंक में ॐ ॐ

इस संस्कृति की सुरक्षा, विश्वमानव की सेवा है

- पूज्य बापूजी

महापुरुषों के चरणों में असंख्य लोग जाते हैं । उनको सुख-शांति मिलती है, ज्ञान मिलता है, प्रेरणा मिलती है, आरोग्यता मिलती है... न जाने कितना कुछ मिलता है ! बदले में लोग कुछ दें तो महापुरुष फिर वे चीजें भी समाज की उन्नति के लिए लगा देते हैं । ऐसे संतों के लिए भी कुछ-का-कुछ कुप्रचार करनेवाले और षड्यंत्र रचनेवाले लोग अनादिकाल से चले आ रहे हैं ।

गुरु नानकदेवजी ने क्या लिया ? रूखी-सूखी रोटी ली, कभी कणा-प्रसाद खाया होगा । यात्रा के लिए कभी पैदल तो कभी रथ में बैठे होंगे । इतनी सारी मुसीबतें सही जिन महापुरुष ने, उनको भी नालायक लोगों ने बाबर के जेल में धकेल दिया, दुनिया जानती है । ऐसे ही सुकरात को दुष्ट लोगों ने ऐसे चक्कर में ला दिया कि उनको सरकारी तौर से मृत्युदंड घोषित हो गया । हम मंसूर को खूब-खूब स्नेह करते हैं, प्रणाम भी करते हैं ऐसे महापुरुष को ! मजहबवादियों ने राजा को उकसाया और आखिर मंसूर के सिर पर फटकार दी गयी शूली की सजा । क्या नानकजी को कमी थी कि इधर से उधर दौड़-धूप करते थे ? नहीं । भवसागर से पार करानेवाली नाव में आप जैसों को बैठाने के लिए वे महापुरुष तकलीफें सहते थे ।
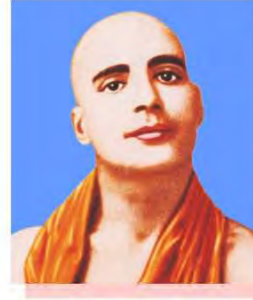
श्री रामकृष्ण परमहंस कहो, **स्वामी विवेकानंद** कहो, **स्वामी रामतीर्थ** कहो, **भगवत्पाद साँईं श्री लीलाशाहजी** कहो, ये जो भी विमल विवेक को पाये हुए महापुरुष हैं, वे कुछ-न-कुछ खूँटा लगा के रखते हैं ताकि वे लोगों के बीच उठने-बैठने के काबिल रहें। नहीं तो बैठे, बंद हो गयी आँखें, समाधि हो गयी।

ब्राह्मी स्थिति प्राप्त कर, कार्य रहे ना शेष।
मोह कभी न ठग सके, इच्छा नहीं लवलेश ॥

फिर भी इच्छा रखते हैं कि 'अच्छा भाई ! शांत रहो, शोर मत करो, ऐसे करो...' यह क्यों करते-कराते हैं ? उनको क्या लेना-देना है ! लेकिन व्यवहार में आपके जैसा ही व्यवहार करेंगे। यह एक खूँटी लगा दी।

ऐसे महापुरुष जब हयात होते हैं, तब उनके साथ बड़ा अन्याय होता है। फिर भी वे महापुरुष सब सह लेते हैं। पाँच-पचीस मूर्खों के कारण करोड़ों लोगों से यह नाव छीन लूँ क्या मैं ? नहीं, नहीं। कितना सहा होगा उन महापुरुषों ने ! फिर भी तुम्हारे बीच टिके रहे, डटे रहे। तुम क्या दे सकते हो उनको ? तुम्हारे पास देने को है भी क्या ? आत्मधन से तो तुम कंगले हो और नश्वर धन को तो वे लात मारकर महापुरुष हुए हैं।

कबीरजी ने क्या बिगाड़ा था ? काशीनरेश मत्था टेकते हैं और बाद में वे ही काशीनरेश कबीरजी को मुजरिम बनाकर अपने न्यायालय में खड़ा कर देते हैं। हालाँकि उन महापुरुषों का कोई दुश्मन नहीं होता लेकिन अभी भी

देखते हैं कि समाज का कहीं शोषण होता है या लोग देश को खंड-खंड करने का षड्यंत्र कर रहे हैं तो हम लोगों को भी सच्चाई बोलनी पड़ती है और फिर उनकी नजर में हम लोग दुश्मन जैसे लगते हैं। वे लोग भी हमारा कुप्रचार खूब करते हैं। जिनके धंधे खराब होंगे या जिनकी दुष्ट मुरादें नाकामयाब होंगी, वे दुष्ट लोग कुछ-न-कुछ तो हमारे लिए भी बकेंगे, करेंगे। सीधी बात है ! वह सब सहन करके भी तुमको जो जगाने के पीछे लगे हैं, उनका दिल कितना तुम्हारे लिए उदार है !

कबीरजी की निंदा होने लगी, अफवाहें होने लगीं। क्या-के-क्या आरोप लगने लगे ! आखिर कुछ लोग बिखर गये। कुछ लोग श्रद्धालु थे, बोले : ''संतों के खिलाफ तो ये नालायक लोग षड्यंत्र करते रहते हैं।'' भगवान राम के गुरु थे वसिष्ठजी महाराज, उन पर भी लोग आरोप करते थे। हमारे लिए भी कुछ लोग बोलते हैं : 'बापू ने फलाने को यह कर दिया...।' ऐसा-ऐसा बकते हैं, ऐसे-ऐसे पर्चे छपवाते हैं, बाँटते हैं ! नारायण (पूज्य बापूजी के सुपुत्र) के लिए कुछ-का-कुछ छपवाते हैं, बाँटते हैं। कैसे-कैसे षड्यंत्र ! कैसी-कैसी अफवाहें ! क्या-क्या बातें बनाते हैं ! यह अभी से नहीं, पिछले ३० सालों से चल रहा है।

ऐसे लोग मेरे गुरुजी के पास जाते : ''बापू ने हमारे को यह कर दिया, वह कर दिया...।'' गुरुजी बोले : ''खबरदार ! इसकी शादी हुई, सुंदर पत्नी और परिवार को छोड़ के मेरे पास रहा है। इस लड़के को मैं जानता हूँ।''

मोटेरा आश्रम जो साबरमती तट पर बना है, उसके चारों तरफ खाइयाँ थीं। आधा-एक बीघा समतल जमीन थी बस, बाकी अपन लोगों ने भरकर समतल की। चारों तरफ दारू की ४०-४० भट्ठियाँ चलती थीं।

पुलिस आ जाय तो पुलिस की पिटाई करके उनको वापस भेज देते। ऐसी जगह पर जब आश्रम बनाया होगा तो कितने विघ्न आये होंगे, जरा सोचो ! अभी तीर्थधाम बन गया है। दारू की ४० भट्ठियाँ बंद हुईं तो उनके मालिक और भट्ठी चलानेवाले जो लोग होंगे, उनको कैसा लगा होगा ? लेकिन अब वे सन्मार्ग में लगे और उनकी आजीविका अच्छी चल गयी तो अभी वे खुश हैं। यहाँ मत्था टेकते हैं बेचारे। लेकिन पहले तो उन्होंने भी तो खूब सुनायी। उस समय अफवाह और कुप्रचार करनेवालों की एक चैनल बनी थी (गुट बना था)। कुछ अखबार तो पैसे लेकर ऐसा-ऐसा लिखते कि महाराज ! आप पढ़ो तो आपको लगे कि ये बाबा नहीं हैं...।

हम कोई ऐसे ही बापूजी होकर पूजे जा रहे हैं क्या ? तुम्हारी उन्नति के लिए हम सब कुछ सह रहे हैं और इससे १० गुना सहने की हमारी तैयारी है। हम किसीका बुरा न सोचते हैं, न करते हैं लेकिन हमारी बुराई के लिए कोई करता है तो हम यही कहते हैं :

जिसने दिया दर्दे दिल उसका प्रभु भला करे।...

हम सचमुच में भाग्यशाली हैं ! ऐसे ब्रह्मज्ञानी संत भारत में ही मिल पाते हैं। भगवान के अवतार भारत में होते हैं और यहीं का प्रसाद देश-विदेश में प्रसारित होता है। कुंडलिनी शक्ति जागृत करने का सामर्थ्य भी भारत के संतों ने विदेश में फैलाया और विदेश के लोग वह सीखकर अपना व्यापार-भाव से प्रचार कर रहे हैं। सारा विश्व मंगलमय हो ! हमारा किसी जाति, सम्प्रदाय, पंथ से कोई विरोध नहीं है परंतु जिस संस्कृति में हम जन्मे हैं उसकी रक्षा करना हमारा दायित्व है। अतः हम उदार बन जायें, ठीक है लेकिन हम इतने मूर्ख न बनें कि हमारी संस्कृति की जड़ें कटती जायें, हम आपस में ही लड़ते रहें।

हिन्दू ही हिन्दू संतों की अवहेलना कर लेते हैं, मुकदमेबाजी करवाते हैं। दूसरे मजहबवाले तो अपने फकीरों के लिए ऐसा नहीं सोचते, करते। 'अपने ही अपने लोगों के पैर काटो।' कितने शर्म की बात है ! कितनी नासमझी की बात है ! परमात्मा का साक्षात्कार इसी जन्म में कर सकते हैं, इतनी ऊँचाइयाँ हमारी वैदिक संस्कृति में, हमारे महापुरुषों के पास अभी भी हैं और ऐसे वे महापुरुष धरती पर अभी भी मिल रहे हैं कि जो पराकाष्ठा तक पहुँचाने में सक्षम हैं। अतः इस संस्कृति की सुरक्षा करना, इस संस्कृति में आपस में संगठित रहना, यह मानव-जाति की, विश्वमानव की सेवा है।

– नीलम दुबे
आश्रम मीडिया प्रवक्ता

बापूजी का करुणामय हृदय

जोधपुर कारागृह में मैं बापूजी से मिलने गयी तो जेल प्रशासन के अफसर से मैंने पूछा : ''हमारे गुरुजी आपके जेल में हैं तो आपको हमेशा से अलग तो लगता होगा ?''

उन्होंने कहा : ''हाँ, लगता है । बहुत-सी बातें हैं । एक बात बताता हूँ कि एक दिन एक कीड़ा बापू के कंधे पर चल रहा था । मैंने उसे हटाने के लिए हाथ आगे किया तो बापू बोले : ''नहीं, नहीं, अपना हिसाब-किताब पूरा करने आया है । उसको छेड़ो नहीं ।''

अफसर ने मुझसे कहा : ''कैसे संत हैं ! एक कीड़े को भी हिसाब-किताब पूरा करने का मौका दे रहे हैं ! उन पर ऐसा घिनौना आरोप लगा देना, मैं हैरान हूँ ! खैर, चलिये मामला न्यायालय में है । भगवान करे जल्दी सच्चाई सामने आये ।''

मैं सोच में पड़ गयी कि जो व्यक्ति शिष्य नहीं है, वह भी ऐसा महसूस कर रहा है तो फिर हर आदमी के मन में यह होना स्वाभाविक ही है ।

''मैं तुम्हारे साथ में हूँ''

एक बार जब मैं बापूजी से जेल में मिलने गयी तो मैंने कहा : ''बापू ! आप कब तक जेल में रहेंगे ? साधक पूछते हैं कि हमारे बापूजी को भोजन मिलता है कि नहीं ? दवा मिलती है कि नहीं ?... दुनियाभर के सवालों के जवाब मैं कैसे दूँ ? आप बाहर आइये, व्यासपीठ पर बैठिये तो लोगों को सवालों के जवाब मिल जायेंगे ।''

बापूजी हँसे और बोले : ''किसने कहा कि मैं जेल में हूँ, तुम महसूस करो मैं तुम्हारे साथ में हूँ ।''

१६ बार मौत के मुँह से बचाया

एक दिन एक बहन ने मुझे फोन किया : ''दीदी ! मैंने सुना है कि आप बापूजी से मिलकर आती हो। आप जब अगली बार जाओ तो कृपया बापूजी के चरणों में मेरा निवेदन रखना।''

''आप कौन हो ? मैं आपको जानती भी नहीं हूँ।''

''मेरा नाम रीना कौशल सतराला है । मैं सिडनी (ऑस्ट्रेलिया) में रहती हूँ। २७ सितम्बर २०१० को मुझे ब्रेन हैमरेज (दिमाग की नस फट जाना) हो गया।''

मैंने कहा : ''क्या ? ब्रेन हैमरेज ! तुम जानती हो किसको कहते हैं ?''

बोली : ''हाँ, ब्रेन हैमरेज होने के बाद सिर में भयंकर पीड़ा चालू हो गयी थी। मैंने अपना सिर जोर से दबा लिया और बापूजी को पुकारने लगी । गुरुदेव की प्रेरणा से उस हालत में मैं खुद ही पड़ोसी के पास पहुँची । ऐसा लग रहा था जैसे बापूजी मेरे साथ चल रहे हैं। पड़ोसी नजदीक के अस्पताल में ले गये। वहाँ से सिडनी के प्रसिद्ध 'वेस्टमेड अस्पताल' भेजा गया और वहाँ उसी दिन मेरा पहला ऑपरेशन हुआ।

सब लोग हैरान थे कि ऐसा ब्रेन हैमरेज का मरीज कभी नहीं देखा जो खुद चलकर चिकित्सा के लिए पहुँचा हो।

२९ सितम्बर को दूसरा ऑपरेशन हुआ, जिसमें मेरे सिर का दायाँ हिस्सा काटकर निकाल लिया गया। जब मुझे होश आया तो मैंने पतिदेव से पूज्य बापूजी का श्रीचित्र व गुरुगीता मँगवायी और वहीं मंत्रजप व पाठ रोज करती थी । १८ अक्टूबर को तीसरे ऑपरेशन के बाद २५ अक्टूबर को मेरी अस्पताल से छुट्टी हो गयी।''

''उसके बाद मेरा घाव रिस रहा था । १५ नवम्बर को जब मैं अस्पताल इलाज के लिए गयी तो डॉक्टरों ने इन्फेक्शन बताकर भर्ती कर लिया और अगले दिन चौथा ऑपरेशन किया । ७ दिसम्बर को भयंकर पीड़ा हो रही थी। अस्पताल के जिस कमरे में मुझे रखा गया था, उसमें १०-१२ मिनट के लिए सूर्य की रोशनी आती थी । मैं सूर्यनारायण के सामने बैठकर बापूजी को आर्तभाव से पुकारने लगी। उस समय सिर से खून की और आँखों से आँसुओं की धाराएँ बह रही थीं । तभी सूर्यदेव से बापूजी श्वेत वस्त्र में प्रकट हुए और मुझसे पूछा : ''बेटी ! क्यों रो रही है ?''

मैं प्रणाम करके बोली : ''बापूजी ! बहुत पीड़ा हो रही है। अभी ४ ऑपरेशन हो चुके हैं, घबराहट हो रही है।''

''बेटी ! बचपन में साइकिल चलाती थी, कभी गिर जाती थी, चोट लगती थी तो क्या वे दर्द व चोटें याद हैं ?''

''नहीं, उन्हें भूल गयी।''

बापूजी मुस्कराये, बोले : ''इन सब बातों को भी भूल जा कि ऑपरेशन हो रहे हैं।''

''फिर मैं क्या करूँ ?''

गुरुदेव शांत होकर बोले : ''अपने अंदर जा ! तेरे अंदर ही परमात्मा है । बाहर तो दुःखों से भरा मिथ्या संसार है ।''

फिर देखते-देखते बापूजी मेरे अंदर ही समाहित हो गये । मेरी आँखें बंद हुईं तो बापूजी के अंदर दर्शन हुए । उसके बाद पीड़ा सहने की असीम शक्ति आ गयी ।

वहाँ कमरे के बाहर जो वॉर्ड बॉय था, उसने मुझसे पूछा : ''आप किससे बातें कर रही थीं ?''

मैंने कहा : ''मैं अपने पूज्य गुरुदेव से बात कर रही थी ।''

वैसे तो स्थूल रूप में बापूजी कभी ऑस्ट्रेलिया नहीं गये परंतु भक्त की पुकार पर समर्थ सद्गुरु कहीं भी कभी भी प्रकट होकर सहायता करते हैं । उस बहन ने बताया कि इस दौरान पूरे सालभर वह भजन लिखती तथा गाती भी थी । मैंने कहा : ''तुम्हारा अनुभव हमारा बहुत मार्गदर्शन करेगा । मैं तुम्हें मीडिया में भी ले के जाऊँगी ।''

''दीदी ! जरूर । मैं अपनी सारी मेडिकल रिपोर्ट्स लेकर चलूँगी । मेरे गुरुजी ने मुझे ९ महीने अपने गर्भ में रखा है । मैं जिंदा नहीं बचती ।''

चमत्कारी लड़की

''९ महीने बापूजी ने कैसे गर्भ में रखा ?''

''दीदी ! लगातार ९ महीनों तक मेरे १६ ऑपरेशन्स हुए । बापूजी हर पल मेरे साथ रहे हैं, मुझे इसका अनुभव भी होता रहा है । डॉक्टरों की पूरी टीम हैरान थी कि यह जिंदा कैसे बच गयी ! यदि बच भी गयी तो पूरी तरह से स्वस्थ कैसे ? न ही याददाश्त समाप्त हुई, न ही पक्षाघात (लकवा) हुआ ! मैं आज भी पूरे होशो-हवास में हूँ एवं मुझे सब कुछ याद है । अस्पताल में सभी मुझे 'चमत्कारी लड़की' बोलते थे । मैंने शादी के बाद ३ साल तक ब्रह्मचर्य रखा था । हम अभी भी संयम से रहते हैं । पूज्य बापूजी कहते हैं : ''जो ब्रह्मचर्य रखता है, उसकी सारी शक्तियाँ उसके साथ होती हैं ।''

''हाँ, मैंने पहचान लिया''

मैंने कहा : ''मैं बापूजी के पास जा के तुम्हारे बारे में क्या बोलूँ ?''

वह बोली : ''दीदी ! बापूजी को आप सिर्फ इतना कहना कि आपने अपनी बच्ची को गर्भ में रखा, पाला-पोसा और आज छोड़ के जेल क्यों चले गये ? आप वापस आ जाओ ।'' मैंने कहा : ''ठीक है ।''

उसके कुछ दिन बाद मेरा जोधपुर जाना हुआ । मैं जैसे ही बापूजी को उस बहन के बारे में बोलने लगी तो बापूजी बोले : ''हाँ, उस गुलाब के फूलवाली बच्ची को बोल देना, मैंने पहचान लिया । उसको बोलना खुश रहे, प्रसन्न रहे । बापूजी जल्दी बाहर आयेंगे ।''

अब गुलाब के फूल के बारे में तो उसने बोला ही नहीं था । मैंने सोचा, 'पता नहीं, बापूजी ने उसे पहचाना है या नहीं ?' मैंने आकर उस बहन को फोन पर फूलवाली बात बतायी ।

वह बोली : ''दीदी ! मैं धन्य हो गयी ! गुरुदेव ने मुझे पहचान लिया । जब मैं बापूजी के दर्शन के लिए गयी थी तो मैंने गुलाब का फूल अर्पित किया था ।''

मैंने सोचा : देखो, इसकी कितनी श्रद्धा है ! और श्रद्धा कैसे-कैसे चमत्कार कर देती है ! ९ मस्तिष्क के और ७ अन्य ऑपरेशनों के बाद कोई जिंदा बचा हो ऐसा मैंने न कभी सुना, न कभी देखा और उसमें भी वह पूरी तरह से स्वस्थ हो ! पूज्यश्री की कृपा के ऐसे अनेकानेक अनुभव हर साधक के जीवन में होते ही रहते हैं ।

जो मीडियावाले बोलते हैं कि बापूजी से लोगों की श्रद्धा टूट गयी है, उन्हें समझना चाहिए कि ऐसे लाभ जिनके जीवन में हुए हैं उन्हें कौन हिला सकता है ? साधकों की श्रद्धा न टूटी है, न टूट सकती है ।

'झूठे आरोप लगानेवाली को मिले सजा'

- अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश श्री वीरेन्द्र भट्ट

बलात्कार के नये कानून बनने के बाद पुलिस रिकॉर्ड में महिलाओं के साथ होनेवाले अपराधों की शिकायतों की बाढ़-सी आ गयी है परंतु बलात्कार के बहुत सारे मामले जाँच के बाद फर्जी पाये जा रहे हैं। यह बात विभिन्न न्यायालय काफी समय से कहते आये हैं। और अब तो महिला आयोग ने भी इस बात को स्वीकार किया कि बलात्कार के फर्जी मामले ज्यादा आने लगे हैं। दिल्ली महिला आयोग की जाँच के अनुसार अप्रैल २०१३ से जुलाई २०१४ तक बलात्कार की कुल २,७५३ शिकायतों में से १,४६६ शिकायतें झूठी पायी गयीं। सिर्फ सवा साल के अंदर आधी से ज्यादा शिकायतें झूठी मिलीं। **दिल्ली महिला आयोग की अध्यक्षा बरखा सिंह शुक्ला** का कहना है : ''इस तरह के गलत और झूठे मामले काफी चिंतित करनेवाले हैं। दुष्कर्म की ज्यादातर फर्जी शिकायतें बदला लेने व पैसे ऐंठने के मकसद से की गयी थीं।'' इससे पूर्व विभिन्न सत्र न्यायालयों, फास्ट ट्रैक कोर्ट्स एवं उच्च न्यायालयों ने भी रेप-रोधी कानूनों के दुरुपयोग पर गहरी चिंता जाहिर की है।

हाल ही में फर्जी मामले दर्ज कराने पर दिल्ली की एक ट्रायल कोर्ट ने अलग-अलग मामलों में दो महिलाओं के खिलाफ कार्यवाही के आदेश देते हुए कहा : ''अगर कोई (महिला या लड़की) अपने फायदे के लिए या निजी वजहों से बलात्कार के झूठे आरोप लगाती है तो उसे सजा मिलनी चाहिए। बलात्कार के झूठे आरोप लगाने के चलन को तुरंत रोका जाना चाहिए क्योंकि अगर किसी व्यक्ति पर बलात्कार का झूठा आरोप लगता है तो यह उसके लिए बेहद दुःख और शर्मिंदगीवाली बात है। इतना ही नहीं, यह शर्मिंदगी और अपमान बेगुनाह साबित होने के बाद भी उसका पीछा नहीं छोड़ते।''

पहले मामले में एक मॉडल ने अपने रिश्तेदार पर बलात्कार का आरोप लगाया था। जाँच में न्यायालय ने पाया कि मॉडल के आरोप बेबुनियाद थे। इससे पहले उसने एक बुजुर्ग प्रवासी भारतीय (एन.आर.आई.) के खिलाफ भी बलात्कार का मुकदमा किया था क्योंकि वह उससे शादी करना चाहती थी।

दूसरे मामले में एक महिला ने दो युवकों पर सामूहिक बलात्कार का झूठा आरोप लगाया था। न्यायालय ने युवकों को बरी करते हुए कहा : ''अब समय आ गया है कि बलात्कार के झूठे आरोप लगाये जाने के चलन को रोका जाय। इसके लिए झूठे आरोप लगानेवाली को सजा दी जाय। बलात्कार के आरोपी को ट्रायल के दौरान भी बलात्कारी ही समझा जाता है (जो कि नासमझी है)। जब किसी पर बलात्कार का झूठा आरोप लगाया जाता है, तब वह व्यक्ति बेहद भयावह मानसिक तनाव और दुःख से गुजरता है। यह वक्त का तकाजा है कि न्यायालय अपने कंधों पर जिम्मेदारी ले।''

झूठे आरोप में ५ साल से कारागृह में

राँची (झारखंड) के गोविंद व महेश पिछले ५ साल से सामूहिक दुष्कर्म के आरोप में कारागृह में बंद हैं। सीआईडी की रिपोर्ट के अनुसार पुलिस ने मामले की जाँच सही तरीके से नहीं की है और आरोप संदेहास्पद है । तथाकथित पीड़िता द्वारा बताये गये पटना के पते पर छानबीन हुई तो पता चला कि उस महिला ने जो अपना नाम बताया था, वहाँ रहनेवाले व्यक्ति की उस नाम की कोई बेटी ही नहीं है।

बिगड़ रहे पारिवारिक रिश्ते

दिल्ली में एक बहू ने अपने ससुर पर छेड़छाड़ और यौन-उत्पीड़न का आरोप लगाया । ससुर को पुलिस ने कारागृह में भेज दिया । सासु ने न्यायालय के सामने पुरानी शिकायत के दस्तावेज प्रस्तुत किये, जिनमें कहा गया था कि बहू उन्हें धमकी देती है कि अगर सासु-ससुर ने अपनी सम्पत्ति उसके नाम नहीं की तो वह उन्हें जेल भिजवा देगी। इस आधार पर न्यायालय ने ससुर को जमानत दे दी। ऐसी ही एक दूसरी घटना में पश्चिमी दिल्ली में एक प्रॉपर्टी डीलर पर उसकी भाभी ने दुष्कर्म का आरोप लगाया। दरअसल, दोनों भाइयों में पैसों की लेन-देन का विवाद चल रहा था। भाभी के आरोप के कारण वह ४ महीने कारागृह में रहा। २ साल मुकदमा भी चला। न्यायालय ने उसे जब निर्दोष घोषित कर मुक्त किया तो उसने कहा : ''भले ही न्यायालय ने मुझे बाइज्जत बरी कर दिया है, मगर मुझ पर क्या बीती यह मैं ही जानता हूँ। मैं घर-बाहर कहीं मुँह दिखाने के काबिल नहीं रहा । ऐसे मामलों में पुरुषों को जिस पीड़ा, चिंता और मुसीबत से गुजरना पड़ता है, आखिर उस तरफ किसीका ध्यान क्यों नहीं जाता ?''

जिला न्यायालयों से लेकर उच्चतम न्यायालय तक सभी न्यायालयों, महिला आयोग, प्रसिद्ध हस्तियों, वरिष्ठ अधिकारियों, सामान्यजनों - सभीके लिए यह अब चिंता का विषय बन चुका है तो ऐसे कानून में संशोधन कब होगा ? कानून सभी पक्षों को ध्यान में रखकर बनाया जाना चाहिए। कानून ऐसा हो जिससे केवल दोषी को सजा मिले, निर्दोष को नहीं। लेकिन वर्तमान में हजारों ऐसे बलात्कार के झूठे मामले सामने आये हैं जिनमें बिना किसी ठोस सबूत के केवल आरोप के आधार पर गिरफ्तारी की गयी और सालों-साल निर्दोषों को जेल में रहना पड़ा है।

'नारी रक्षा मंच' की अध्यक्षा एवं इंडियन नेवी की रिटायर्ड लेफ्टिनेंट ऑफिसर श्रीमती रुपाली दुबे कहती हैं कि ''यदि नारी-सुरक्षा चाहते हैं तो अश्लील वेबसाइटों, फिल्मों, विज्ञापनों पर लगाम कसी जानी चाहिए और सभीको भारतीय संस्कृति की संयम-शिक्षा दी जानी चाहिए। नारी परिवार की नींव बनकर उसे सँभालती है। दहेज-रोधी कानून के दुरुपयोग से पारिवारिक व्यवस्था में जैसी त्राहिमाम् मची थी, क्या वैसी स्थिति की प्रतीक्षा की जा रही है ? स्वार्थी तत्त्वों का मोहरा बनी नारियों द्वारा रेप-रोधी कानूनों का दुरुपयोग किया जाने से समस्त नारी-जाति बदनाम हो रही है। इसलिए आज इस स्थिति को नियंत्रित करने के लिए आवश्यकता है कि समाज जागृत एवं एकजुट हो तथा विभिन्न न्यायालयों एवं गणमान्य हस्तियों ने इन कानूनों में जो संशोधन की जरूरत बतायी है, उनकी उस माँग को सुदृढ़ रूप से समर्थन प्रदान करे।'' **- श्री मानव बुद्धदेव सामाजिक कार्यकर्ता**

''कई बार लोगों के अपने निहित स्वार्थ होते हैं जिनकी वजह से बलात्कार की शिकायतें की जाती हैं। ये सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक हो सकते हैं, जिसमें व्यक्ति जान-बूझकर इस तरह का कदम उठाता है।''

- श्री निमेश जी. देसाई, निदेशक, मानव व्यवहार एवं संबद्ध विज्ञान संस्थान

करोलबाग-दिल्ली में अवैध निर्माण की झूठी खबरों की पोल-खोल

हाल ही में झूठी खबरों द्वारा समाज को भ्रमित किया गया कि राष्ट्रीय हरित अधिकरण (एनजीटी) ने मनोकामनासिद्ध हनुमान मंदिर, करोलबाग (दिल्ली) परिसर में निर्माण को अवैध बताकर उसे गिराने का आदेश दिया है। वास्तविकता यह है कि एनजीटी द्वारा जारी आदेश में कहा गया है कि २००३ के बाद यदि वहाँ कोई निर्माण हुआ हो तो उसे हटाया जाय परंतु वहाँ ऐसा कोई निर्माण नहीं हुआ है।

एनजीटी द्वारा १००० पौधे लगाने की बात भी कही गयी है। उल्लेखनीय है कि आज भी करोलबाग के इस मनोकामनासिद्ध हनुमान मंदिर के आसपास तथा बाहर रोड डिवाइडर को पूर्ण रूप से हरा-भरा रखा गया है और वृक्षारोपण का कार्य सतत जारी है। केवल यहाँ पर ही नहीं, पूरे देश में कई वर्षों से 'पर्यावरण सुरक्षा अभियान' के तहत लाखों पेड़-पौधे लगाये जाते रहे हैं। नीम, तुलसी, पीपल, आँवला जैसे पर्यावरणरक्षक वृक्षों को लगाने पर विशेष जोर दिया जाता रहा है।

आश्रम द्वारा जमीन हड़पने की खबरें भी फैलायी गयीं जबकि अधिकरण द्वारा गठित कमेटी ने यह स्वीकार किया है कि आश्रम द्वारा किसी भी प्रकार की जमीन नहीं दबायी गयी है। अतः इस संदर्भ में जो भ्रामक खबरें उछाली जा रही हैं, उनका वास्तविकता से कोई लेना-देना नहीं है। प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया भ्रामक खबरें न चलायें, इससे आपकी ही विश्वसनीयता घटती है। **- श्री इन्द्र सिंह राजपूत**

खुल रही है षड्यंत्र की पोल

'बापूजी को जानबूझकर फँसाया गया'

- श्री संजीव पुनालेकर, अधिवक्ता, राष्ट्रीय सचिव, हिन्दू विधिज्ञ परिषद

पिछले कुछ समय से हिन्दू संतों और उनके संगठनों के खिलाफ कुछ गैर-सरकारी संगठन लामबंद होते रहे हैं । विदेशी पैसों से चलनेवाले कई गैर-सरकारी संगठनों पर पहले भी केन्द्र सरकार की इंटेलिजेंस ब्यूरो की रिपोर्ट में उनके निर्धारित उद्देश्यों से हटकर कार्य करने पर तथा प्रोटेस्ट कल्चर (बार-बार विरोध और आंदोलन का सहारा लेना) और मीडिया ट्रायल के जरिये जनता की आवाज बनाने (पब्लिक ओपीनियन मेकिंग) के प्रयासों को लेकर सवालिया निशान लगते रहे हैं ।

हिन्दू विधिज्ञ परिषद के राष्ट्रीय सचिव श्री संजीव पुनालेकर ने मुंबई में आयोजित एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा : ''करोड़ों हिन्दुओं के आराध्य संत श्री आशारामजी बापू को जानबूझकर षड्यंत्रों के तहत फँसाया गया, उनके खिलाफ लगाये गये आरोप बेबुनियाद हैं ।''

एक संदिग्ध संस्था ने की थी लड़की की काउंसिलिंग

श्री पुनालेकर ने कहा कि ''जोधपुर केस में दिल्ली के जिस गैर-सरकारी संस्थान 'कल्पना' ने आरोप लगानेवाली लड़की की काउंसिलिंग की है, उसकी विश्वसनीयता संदिग्ध है । गौरतलब है कि इस एनजीओ को चलानेवाली किरण झा ने न्यायालय में यह स्वीकारा है कि 'कल्पना संस्था ने अपने टैक्स रिटर्न्स आज तक नहीं भरे हैं । संस्था का किसी भी बैंक में आधिकारिक खाता नहीं है ।' संस्था यह तक बता पाने में असमर्थ रही है कि आज तक उसने कितनी बलात्कार-पीड़ित महिलाओं की काउंसिलिंग की है । जोधपुर सत्र न्यायालय में ट्रायल के दौरान किरण झा ने अपने एनजीओ को दिल्ली महिला आयोग से 'क्राइसिस इंटरवेंशन सेंटर फॉर रेप विक्टिम्स' के लिए अधिकृत होना बताया है । लेकिन महिला आयोग ने इस बात से लिखित में इन्कार कर दिया है । इस बात का खुलासा 'सूचना के अधिकार' के तहत दायर अर्जी के द्वारा हुआ है ।''

वरिष्ठ पत्रकार श्री अरुण रामतीर्थकरजी ने कहा : ''संत श्री आशारामजी बापू पर लगे हुए रेप के झूठे आरोपों का पूरा मामला कुछ प्रभावशाली व्यक्तियों, छद्मी संगठनों एवं राष्ट्र-विखंडन चाहनेवाली विदेशी ताकतों की मिलीभगत का अंजाम है । इसका खुलासा इन तथ्यों से हो रहा है ।''

(दबंग दुनिया समाचार पत्र के आधार पर)

ऋषि प्रसाद प्रश्नोत्तरी

नीचे दिये गये रिक्त स्थानों के उत्तर खोजने के लिए इस अंक को ध्यानपूर्वक पढ़िये । उत्तर अगले अंक में प्रकाशित किये जायेंगे ।

(१) .... के दिन सूर्योदय से पहले स्नान करने से दस हजार गौदान करने का फल होता है ।

(२) उपनिषदों का यही सिद्धांत है कि बिना .... के मुक्ति नहीं होती ।

(३) .... जीवन का एक शिक्षाप्रद पड़ाव है ।

(४) .... अशांति और देर-सवेर विनाश को निमंत्रण देता है ।

लड़की के आयुसंबंधी दस्तावेज उपलब्ध करायें

- सर्वोच्च न्यायालय

१५ अक्टूबर को माननीय उच्चतम न्यायालय ने सत्र न्यायालय, जोधपुर को निम्नलिखित कागजातों को मँगवाने का आदेश दिया है :

(१) लड़की के विद्यालय के दाखिले का आवेदन (२) रजिस्ट्रेशन फॉर्म (३) एफिडेविट जो लड़की के पिता की शपथ से युक्त है (४) लड़की के बीमा से संबंधित भारतीय जीवन बीमा निगम के कागजात। इनमें लिखी जन्मतिथि के अनुसार लड़की बालिग है।

साथ ही मा. उच्चतम न्यायालय ने 'एम्स अस्पताल' को बोर्ड गठित कर पूज्य बापूजी के खराब स्वास्थ्य से संबंधित मेडिकल रिपोर्ट न्यायालय में प्रस्तुत करने को कहा है । इसके बाद ही बापूजी के इलाज के लिए माँगी गयी अंतरिम जमानत की याचिका पर कोई निर्णय लिया जायेगा।

चौंकानेवाली बात तो यह है कि आज से ९ महीने पहले से जोधपुर पुलिस के पास लड़की के उम्रसंबंधी मूल दस्तावेज उपलब्ध थे पर पुलिस उन्हें न्यायालय में प्रस्तुत करने से बचती रही और पूज्य बापूजी के वकीलों द्वारा दस्तावेज प्रस्तुत किये जाने पर सत्र न्यायालय ने इन दस्तावेजों को महत्त्व नहीं दिया और ट्रायल पॉक्सो एक्ट के तहत चलाया। अब मा. उच्चतम न्यायालय के आदेशानुसार लड़की के आयुसंबंधी मूल दस्तावेज मँगवाने के लिए सत्र न्यायालय, जोधपुर कार्यवाही करेगा।

- श्री ए.के. ठाकुर

ॐ ॐ ॐ... पेशी पर जाते समय जो साधक-साधिकाएँ दर्शन के लिए खड़े रहते हैं, उनकी श्रद्धा-भक्ति को भुलाया नहीं जा सकता, उनकी दृढ़ता ईश्वरप्राप्ति करा ही देगी।

भीष्म पितामह को ७३ जन्मों के बाद बाणों की शय्या का दुःख देखना पड़ा लेकिन भीतर से दुःखी नहीं थे । शरीर को 'मैं' मानने का अज्ञान अलविदा हो गया था। शरीर और मन, मति व परिस्थिति प्रकृति में हैं; तुम द्रष्टा, साक्षी अपने परमात्म-स्वभाव में भीष्मजी की नाईं, कबीरजी व नानकजी की नाईं तथा असंख्य सत्शिष्यों की नाईं 'सत्' में जागते जाओ ! ॐ आनंद... ॐ शांति... ॐ प्यारेजी... ॐ प्रभुजी... ॐ गुरुजी... अंधकार सदा नहीं रहता, प्रकाश के दिन आयेंगे।

(मकर संक्रांति : १४ व १५ जनवरी)

मकर संक्रांति अर्थात् उत्तरायण महापर्व के दिन से अंधकारमयी रात्रि छोटी होती जायेगी और प्रकाशमय दिवस लम्बे होते जायेंगे। हम भी इस दिन दृढ़ निश्चय करें कि अपने जीवन में से अंधकारमयी वासना की वृत्ति को कम करते जायेंगे और सेवा तथा प्रभुप्राप्ति की सद्वृत्ति को बढ़ाते जायेंगे।

सम्यक् क्रांति का संदेश

मकर संक्रांति - 'सम्यक् क्रांति'। वैसे समाज में क्रांति तो बहुत है, एक-दूसरे को नीचे गिराओ और ऊपर उठो, मार-काट... परंतु मकर संक्रांति बोलती है मार-काट नहीं, सम्यक् क्रांति। सबकी उन्नति में अपनी उन्नति, सबकी ज्ञानवृद्धि में अपनी ज्ञानवृद्धि, सबके स्वास्थ्य में अपना स्वास्थ्य, सबकी प्रसन्नता में अपनी प्रसन्नता। दूसरों को निचोड़कर आप प्रसन्न होने जाओगे तो हिटलर और सिकंदर का रास्ता है, कंस और रावण का रास्ता है। श्रीकृष्ण की नाईं गाय चरानेवालों को भी अपने साथ उन्नत करते हुए संगच्छध्वं संवदध्वं... कदम से कदम मिलाकर चलो, दिल से दिल मिलाकर चलो। दिल से दिल मिलाओ माने विचार से विचार ऐसे मिलाओ कि सभी ईश्वरप्राप्ति के रास्ते चलें देर-सवेर और एक-दूसरे को सहयोग करें।

उत्तरायण पर्व कैसे मनायें ?

इस दिन स्नान, दान, जप, तप का प्रभाव ज्यादा होता है। उत्तरायण के एक दिन पूर्व रात को भोजन थोड़ा कम लेना। दूसरी बात, उत्तरायण के दिन पंचगव्य का पान पापनाशक एवं विशेष पुण्यदायी माना गया है। त्वचा से लेकर अस्थि तक की बीमारियों की जड़ें पंचगव्य उखाड़ के फेंक देता है। पंचगव्य आदि न बना सको तो कम-से-कम गाय का गोबर, गोझरण, थोड़े तिल, थोड़ी हल्दी और आँवले का चूर्ण इनका उबटन बनाकर उसे लगा के स्नान करो अथवा सप्तधान्य उबटन से स्नान करो (पिसे हुए गेहूँ, चावल, जौ, तिल, चना, मूँग और उड़द से बना मिश्रण)। इस पर्व पर जो प्रातःस्नान नहीं करते हैं वे सात जन्मों तक रोगी और निर्धन रहते हैं। मकर संक्रांति के दिन सूर्योदय से पहले स्नान करने से दस हजार गौदान करने का फल शास्त्र में लिखा है और इस दिन सूर्यनारायण का मानसिक रूप से ध्यान करके मन-ही-मन उनसे आयु-आरोग्य के लिए की गयी प्रार्थना विशेष प्रभावशाली होती है।

इस दिन किये गये सत्कर्म विशेष फलदायी होते हैं। इस दिन भगवान शिव को

तिल, चावल अर्पण करने अथवा तिल, चावल मिश्रित जल से अर्घ्य देने का भी विधान है। उत्तरायण के दिन रात्रि का भोजन न करें तो अच्छा है लेकिन जिनको संतान है उनको उपवास करना मना किया गया है। इस दिन जो ६ प्रकार से तिलों का उपयोग करता है वह इस लोक और परलोक में वांछित फल को पाता है :

(१) पानी में तिल डाल के स्नान करना
(२) तिलों का उबटन लगाना
(३) तिल डालकर पितरों का तर्पण करना, जल देना
(४) अग्नि में तिल डालकर यज्ञादि करना
(५) तिलों का दान करना
(६) तिल खाना।

तिलों की महिमा तो है लेकिन तिल की महिमा सुनकर तिल अति भी न खायें और रात्रि को तिल और तिलमिश्रित वस्तु खाना वर्जित है।

सूर्य-उपासना करें

ॐ आदित्याय विद्महे भास्कराय धीमहि। तन्नो भानुः प्रचोदयात्। इस सूर्यगायत्री के द्वारा सूर्यनारायण को अर्घ्य देना विशेष लाभकारी माना गया है अथवा तो **ॐ सूर्याय नमः। ॐ रवये नमः।...** करके भी अर्घ्य दे सकते हैं।

आदित्य देव की उपासना करते समय अगर सूर्यगायत्री का जप करके ताँबे के लोटे से जल चढ़ाते हैं और चढ़ा हुआ जल जिस धरती पर गिरा, वहाँ की मिट्टी का तिलक लगाते हैं तथा लोटे में ६ घूँट बचाकर रखा हुआ जल महामृत्युंजय मंत्र का जप करके पीते हैं तो आरोग्य की खूब रक्षा होती है। आचमन लेने से पहले उच्चारण करना होता है :

अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधिविनाशनम्।
सूर्यपादोदकं तीर्थं जठरे धारयाम्यहम्॥

अकाल मृत्यु को हरनेवाले सूर्यनारायण के चरणों का जल मैं अपने जठर में धारण करता हूँ। जठर भीतर के सभी रोगों को और सूर्य की कृपा बाहर के शत्रुओं, विघ्नों, अकाल-मृत्यु आदि को हरे।

भीष्म पर्व

भीष्म पितामह संकल्प करके ५८ दिनों तक शर-शय्या पर पड़े रहे और उत्तरायण काल का इंतजार किया था। बाणों की पीड़ा सहते हुए भी प्राण न त्यागे और पीड़ा के भी साक्षी बने रहे।

भीष्म पितामह से राजा युधिष्ठिर प्रश्न करते हैं और भीष्म पितामह शर-शय्या पर लेटे-लेटे उत्तर देते हैं। कैसी समता है इस भारत के वीर की ! कैसी बहादुरी है तन की, मन की और परिस्थितियों के सिर पर पैर रखने की ! कैसी हमारी संस्कृति है ! क्या विश्व में कोई ऐसा दृष्टांत सुना है ?

उत्तरायण उस महापुरुष के सुमिरन का दिवस भी है और अपने जीवन में परिस्थितिरूपी बाणों की शय्या पर सोते हुए भी समता, ज्ञान और आत्मवैभव को पाने की प्रेरणा देनेवाला दिवस भी है। दुनिया की कोई परिस्थिति तुम्हारे वास्तविक स्वरूप - आत्मस्वरूप को मिटा नहीं सकती। मौत भी जब तुम्हारे को मिटा नहीं सकती तो ये परिस्थितियाँ क्या तुम्हें मिटायेंगी !

हमें मिटा सके ये जमाने में दम नहीं।
हमसे जमाना है, जमाने से हम नहीं ।।

यह भीष्मजी ने करके दिखाया है।

सूर्यदेव आत्मदेव के प्रतीक हैं। जैसे आत्मदेव मन को, बुद्धि को, शरीर को, संसार को प्रकाशित करते हैं, ऐसे ही सूर्य पूरे संसार को प्रकाशित करता है। लेकिन सूर्य को भी प्रकाशित करनेवाला तुम्हारा आत्मसूर्य (आत्मदेव) ही है। यह सूर्य है कि नहीं, उसको जाननेवाला कौन है ? 'मैं'।

उत्तरायण का मेरा संदेश है कि आप सुबह नींद में से उठो तो प्रीतिपूर्वक भगवान का सुमिरन करना कि 'भगवान ! हम जैसे भी हैं, आपके हैं। आप 'सत्' हैं तो हमारी मति में सत्प्रेरणा दीजिये ताकि हम गलत निर्णय करके दुःख की खाई में न गिरें। गलत कर्म करके हम समाज, कुटुम्ब, माँ-बाप, परिवार, आस-पड़ोस तथा औरों के लिए मुसीबत न खड़ी करें।' ऐसा अगर आप संकल्प करते हैं तो भगवान आपको बहुत मदद करेंगे। भगवान उन्हींको मदद करते हैं जो भगवान को प्रार्थना करते हैं, भगवान को प्रीति करते हैं। और भगवान के प्यारे संतों का सत्संग सुनने के लिए वे ही लोग आ सकते हैं जिन पर भगवान की कृपा होती है।

बिनु हरिकृपा मिलहिं नहिं संता।

(रामायण)

परदुःखकातरता के साक्षात् विग्रह

हाड कँपा देनेवाली कड़कड़ाती ठंड की रात... गौशाला में एक नौजवान को बिना किसी बिछावन के नंगे फर्श पर सोता देख रमण महर्षि का हृदय द्रवीभूत हो उठा। उन्होंने उससे पूछा : ''बेटा ! रात में गौशाला में सोते हो तो ओढ़ते क्या हो ?''

लड़के ने अपनी एक फटी-पुरानी चादर दिखाते हुए कहा : ''महाराजजी ! मेरे पास बस यही सहारा है।'' कड़ाके की सर्दी में लड़के की तकलीफ की कल्पना से ही महर्षि का हृदय काँप उठा। उन्होंने तुरंत अपनी माँ की कुटीर में आकर कुछ पुरानी साड़ियाँ लीं और उनमें रूई डालकर एक गुदड़ी बना दी, जिसका खोल उनकी माँ ने सिल दिया। कुछ ही देर में गुदड़ी तैयार ! और वे स्वयं उसे लड़के को ओढ़ा आये।

दूसरे दिन प्रातः-भ्रमण के समय महर्षि ने गौशाला में जाकर आत्मीयता से उस लड़के से पूछा : ''बेटा ! कल रात नींद कैसी आयी ?'' नौजवान ने भावविभोर होकर आभार व्यक्त करते हुए बड़ी ही प्रसन्नता से कहा : ''महाराजजी ! आपकी दया से खूब अच्छी और मीठी नींद आयी।'' उसको सुखी देख महर्षि भी आनंदित हो गये। कैसे होते हैं ब्रह्मज्ञानी महापुरुष ! उन्हें प्राणिमात्र का दर्द अपना ही दर्द लगता है। ऐसे ब्रह्मवेत्ता महापुरुष समग्र संसार को अपना शरीर और प्राणिमात्र को अपना आत्मस्वरूप समझते हैं।

महानिर्वाणी अखाड़ा (मेहसाणा, गुजरात) के महंत श्री रामगिरि महाराज परदुःखकातरता के साक्षात् विग्रह पूज्य बापूजी के सान्निध्य में बीते सुनहरे पलों की स्मृतियाँ ताजी करते हुए कहते हैं : ''पूज्य बापूजी रात को अक्सर देखते थे कि कहीं किसीको तकलीफ तो नहीं है। जो टॉर्चवाली बात टीवी पर दिखाते हैं न, कि बापूजी के पास में टॉर्च होती है, उनको पता नहीं कि टॉर्च क्यों रखते थे। आज मैं बताता हूँ टॉर्च क्यों रखते थे बापूजी।

आज से कई साल पहले मैं अहमदाबाद आश्रम में सोया हुआ था। रात के करीब ढाई बजे होंगे। बापूजी आये और उन्होंने टॉर्च से लाइट मारी। मुझे पता चल गया कि यह रोशनी बापूजी की टॉर्च की है। आँखें बंद कर लीं मैंने। वहाँ अंदर साधक सोये हुए थे। ठंड का मौसम था। एक भाई ने कुछ ओढ़ा नहीं था,

उसको ठंड लग रही थी। बापूजी ने उसको देखा और चले गये। ५ मिनट बाद वापस आये। उनके हाथ में कम्बल था और बापूजी ने अपने हाथों से उस साधक को कम्बल ओढ़ाया।

५-६ दिन के बाद मैंने उस लड़के से पूछा : ''तुम्हें उस रात को ठंडी लग रही थी तो कम्बल किसने ओढ़ाया था पता है ?'' बोला : ''नहीं।''

मैंने बोला : ''वह कम्बल बापूजी ने ओढ़ाया था।''

''आपको कैसे पता ?''

''जब बापूजी आये थे उस समय मैं लेटा तो था परंतु जग रहा था और मैंने अपनी आँखों से देखी बापूजी की करुणा-कृपा।''

ऐसे हैं मेरे गुरुदेव ! ऐसे-ऐसे सेवा करते हैं कि एक हाथ से दिया तो दूसरे हाथ को पता नहीं चले।''

ऐसे ही बापूजी कभी रास्ते में भीग रहे किसी राही को अपना छाता तो किसी जरूरतमंद को अपनी ओढ़ी हुई धोती दे देते हैं। एक बार गरीब मजदूरों को तपती धूप में साइकिल पर डबल सीट जाते देखा तो उन लोगों में साइकिलें और टोपियाँ बँटवा दीं। खेत में सुबह से तपती धूप में काम करनेवाले किसानों को ठंडा खाना खाते देख द्रवित हो गर्म भोजन के डिब्बे बँटवा दिये और पिछले कई सालों से बँटवाते आ रहे हैं। कभी महसूस ही नहीं हो पाता कि वे जो कर रहे हैं, किसी अन्य व्यक्ति के लिए कर रहे हैं। ऐसे महापुरुष की करुणा-कृपा का कितना-कितना बखान किया जाय ! ऐसे में वाणी भी साथ छोड़ देती है तो कलम कितना साथ देगी !!

परदुःखकातरता के साक्षात् विग्रह आत्मनिष्ठ पूज्य बापूजी बताते हैं : ''लोग प्रायः जिनसे घृणा करते हैं ऐसे निर्धन, रोगी इत्यादि को साक्षात् ईश्वर समझकर उनकी सेवा करना यह अनन्य भक्ति एवं आत्मज्ञान का वास्तविक स्वरूप है।'' और इसी सिद्धांत पर पूज्यश्री स्वयं चलते हैं और अपने अनुयायियों को भी चलने की सीख देते हैं।

पूर्ण जानकारी बिना मान्यताएँ न बनायें

- आचार्य श्री हेमंत कृष्णजी, बरसाना, मथुरा (उ.प्र.)

परम पूज्य बापूजी पर लगाये गये सारे आरोप निराधार हैं। कई बार जिसकी पूर्ण जानकारी हमारे पास नहीं होती, हम उसका गलत अर्थ निकालते रहते हैं। ऐसी ही भूल बापूजी के बारे में कुछ लोगों की हो रही है। मैं सच्चे हृदय से श्री राधारानी से प्रार्थना करता हूँ कि बापूजी अतिशीघ्र हम सबको दर्शन दें और अपने वचनामृतों से कृतार्थ करें। जब बापूजी निर्दोष बाहर आयेंगे उस समय 'सत्यमेव जयते' के पवित्र नारे को और बल मिलेगा। तब तक मैं सभी साधकों, सभी वैष्णवों एवं समस्त धार्मिक लोगों से यही प्रार्थना करता हूँ कि अपना धैर्य बनाये रखें, आप देखेंगे कि प्रभु की कृपा अपना काम कर रही है। बापूजी के दिये उपदेशों को ध्यान में रखें। किसी भी अनर्गल बात पर ध्यान न दें।

आप अपने साथ अन्याय तो नहीं कर रहे हैं ?

श्री शंकराचार्य भगवान कहते हैं कि 'कुछ भी करो और चाहे जब तक करते रहो, जब तक आत्मा और ब्रह्म की एकता का बोध नहीं होता तब तक सौ कल्पों में भी मोक्ष की सिद्धि नहीं हो सकती ।' उपनिषदों का यही सिद्धांत है कि 'बिना ज्ञान के मुक्ति नहीं होती । उसको जानकर ही मृत्यु का अतिक्रमण (मृत्यु को पार) किया जाता है। इसके सिवा अन्य कोई रास्ता नहीं है।'

प्रश्न यह है कि आप पाना क्या चाहते हैं और छूटना किससे चाहते हैं ? असल में आप अजर-अमर जीवन, सत्य ज्ञान और सहज बोधरूप स्वतंत्र परमानंद पाना चाहते हैं और जड़ता, मृत्यु, दुःख और पराधीनता से हमेशा-हमेशा के लिए छूटना चाहते हैं। दीनता-हीनता, पराधीनता, विकारिता सबसे मुक्ति चाहते हैं। दूसरे शब्दों में आप 'मोक्ष' चाहते हैं। यदि इस मोक्ष के प्रति आपकी इच्छा जाग्रत हो गयी है तो आत्मा और ब्रह्म के एकत्व-बोध के बिना इस मोक्ष की सिद्धि सम्भव नहीं है। जो कुछ करना है इसी एकत्व-बोध के लिए करना है।

वैदिक कर्मों का अनुष्ठान तथा वैदिक देवताओं का यजन लौकिक-पारलौकिक सुख का हेतु तो हो सकता है परंतु सुख की आसक्ति और पराधीनता की निवृत्ति नहीं कर सकता, परिच्छिन्नता की भ्रांति निवृत्त नहीं कर सकता। अतः वह मोक्ष में हेतु नहीं हो सकता।

समाधि और इष्ट-चिंतन विक्षेप और अनिष्ट का तो निवर्तक (दूर करनेवाला) है और वह भी उसी काल के लिए परंतु जीवत्व (कर्तृत्व-भोक्तृत्व, संसारित्व और परिच्छिन्नत्व) का निवर्तक नहीं है। अतः ये भी मुक्ति के साधन नहीं हैं।

ईसाई, मुसलमान का मजहब विश्वास पर है, धर्म और योग का पंथ पौरुष का है, भक्ति का मार्ग ईश्वरानुग्रह पर है और वेदांत का मार्ग आत्मविचार पर है।

यदि आप मनुष्य-जन्म पाकर भी और विचारशक्ति सम्पन्न होकर भी मोक्ष के लिए प्रयत्न नहीं करते तो आप अपने प्रति बहुत निष्ठुरता बरत रहे हैं, अपने साथ अन्याय कर रहे हैं। समझदार आदमी का काम यह है कि वह पहले अपनी विमुक्ति के लिए प्रयत्न करे।

उसके लिए क्या तैयारी करे ?

(यह जानने हेतु प्रतीक्षा कीजिये अगले अंक की ।)

शीघ्र उन्नति के लिए

ॐ

ॐकार का दीर्घ उच्चारण करें फिर शांत हो जायें, फिर श्वासोच्छ्वास में ॐकार को देखें। यह प्रयोग एक ही समय में कम-से-कम २० बार करना है। अधिकस्य अधिकं फलम्। अधिक करें तो और अच्छा है। सभी यह प्रयोग करें। - पूज्य बापूजी

आदर्श अधिवक्ता मालवीयजी

(पं. मालवीयजी जयंती : २५ दिसम्बर)

पं. मदनमोहन मालवीयजी एक महान देशभक्त, आदर्श शिक्षक, क्रांतिकारी सम्पादक, हिन्दू धर्म के संरक्षक व समाजसेवक होने के साथ-साथ एक आदर्श वकील भी थे।

तीव्र बुद्धि, स्पष्टवादिता, वाक्पटुता एवं विलक्षण तर्कशक्ति के कारण कुछ ही दिनों में उनकी सर्वत्र प्रशंसा होने लगी। मालवीयजी झूठे एवं धोखाधड़ीवाले मुकदमे कभी नहीं लेते थे, चाहे इसके लिए उन्हें कितना ही प्रलोभन क्यों न दिया जाय। वे अदालत में उसी मुकदमे की पैरवी करते थे, जिसमें किसी निरपराध पर अत्याचार व अन्याय होता हो। उन लोगों को न्याय दिलाना उनके लिए ईश्वर की बंदगी के समान था।

वे पूरी तैयारी के साथ न्यायाधीश के सामने अत्यंत निष्पक्षतापूर्वक बहस करते थे। वे कानूनी तथा तथ्यात्मक पक्ष को ऐसी शांत, प्रामाणिक रीति से प्रस्तुत करते थे कि उनके विरोधी वकीलों को सदा उन तथ्यों एवं तर्कों का खंडन करना कठिन हो जाता था।

सन् १९०४ में मालवीयजी 'काशी हिन्दू विश्वविद्यालय' की भावी योजना बनाने में विशेष रूप से सक्रिय हो गये। इसके लिए उन्हें अधिक-से-अधिक श्रम एवं समय की नितांत आवश्यकता थी। इसलिए उन्होंने सन् १९११ में वकालत करना पूरी तरह से बंद कर दिया।

असहयोग आंदोलन के दौरान ५ फरवरी १९२२ को उत्तेजित भीड़ ने उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिले में स्थित चौरी-चौरा पुलिस थाने में आग लगा दी, जिसमें २२ पुलिसकर्मी जिंदा जल गये। इस हत्याकांड में २२५ आदमी बंदी बनाये गये, जिन पर आग लगाने एवं हत्या करने का अभियोग लगाया गया। कोई भी वकील उनकी ओर से पैरवी करने को तैयार नहीं हो रहा था। गोरखपुर के सत्र न्यायाधीश ने २२५ व्यक्तियों को फाँसी की सजा सुना दी थी। जब उनका मुकदमा इलाहाबाद उच्च न्यायालय में आया तो सबकी दृष्टि मालवीयजी के ऊपर गयी।

उस समय मालवीयजी को वकालत छोड़े हुए १० वर्ष हो चुके थे। फिर भी जब उन्होंने देखा कि इस केस में कई निर्दोष लोग भी बेवजह मौत के घाट उतारे जायेंगे तो उन्होंने यह मुकदमा अपने हाथ में ले लिया। उन्होंने इतने अच्छे ढंग से बहस की कि १५३ अभियुक्तों की फाँसी की सजा रद्द हो गयी और उन्हें अपेक्षाकृत कम सजाएँ मिलीं। मालवीयजी की बहस समाप्त होने के पश्चात् मुख्य न्यायाधीश ने खड़े होकर मालवीयजी को सम्बोधित करते हुए कहा कि "जिस विस्मयजनक योग्यता एवं दक्षता के साथ आपने इस मुकदमे में बहस की है, उसके लिए ये सभी अभियुक्त और इनके परिवार सदा आपके कृतज्ञ रहेंगे। आपके सिवाय कोई भी अन्य व्यक्ति इस मुकदमे को इतने अच्छे ढंग से प्रस्तुत नहीं कर सकता था।"

परदुःख हरनेवाले मालवीयजी के इस सुप्रयास से १५३ निर्दोष लोगों की जीवनरक्षा हुई। उन्हें महामना क्यों न कहा जाय! अपने आचरण से उन्होंने शिक्षा दी कि सच्चा अधिवक्ता वही है जो सत्य को पहचाने, न कि सत्य पर आवरण डालकर निर्दोष को दोषी ठहराये और सजा दिलवाये। मालवीयजी ने धर्म व सत्य के बल पर अंग्रेज न्यायाधीश से भी बेकसूरों को बचा लिया। यदि आज के अधिवक्ता मालवीयजी का अनुसरण करें तो वे लोकप्रिय अधिवक्ता तो बन ही सकते हैं, साथ ही अपने कर्म से ही ईश्वर की बंदगी कर, ईश्वर की प्रसन्नता पा के वकालत को कर्मयोग बनाकर कर्मयोगी भी हो सकते हैं।

शब्द का प्रभाव

शब्दों का बड़ा भारी असर होता है। दिन-रात अज्ञानता के शब्द सुनते रहने से अज्ञान दृढ़ हो जाता है, विकारों के शब्द सुनते रहने से मन विकारी बन जाता है, निंदा के शब्द सुनते रहने से चित्त संशयवाला बन जाता है, अपनी प्रशंसा के शब्द सुनते रहने से चित्त में अहंभाव आ जाता है । परमात्मस्वरूप के शब्द सुनकर चित्त देर-सवेर आत्मा-परमात्मा में भी जाग जाता है।

'अंधे की औलाद अंधी...' द्रौपदी के इन शब्दों ने ही महाभारत का युद्ध करवा दिया। ये शब्द ही दुर्योधन को चुभ गये और समय पाकर भरी सभा में द्रौपदी को निर्वस्त्र करने का प्रयास इन्हीं शब्दों ने करवाया।
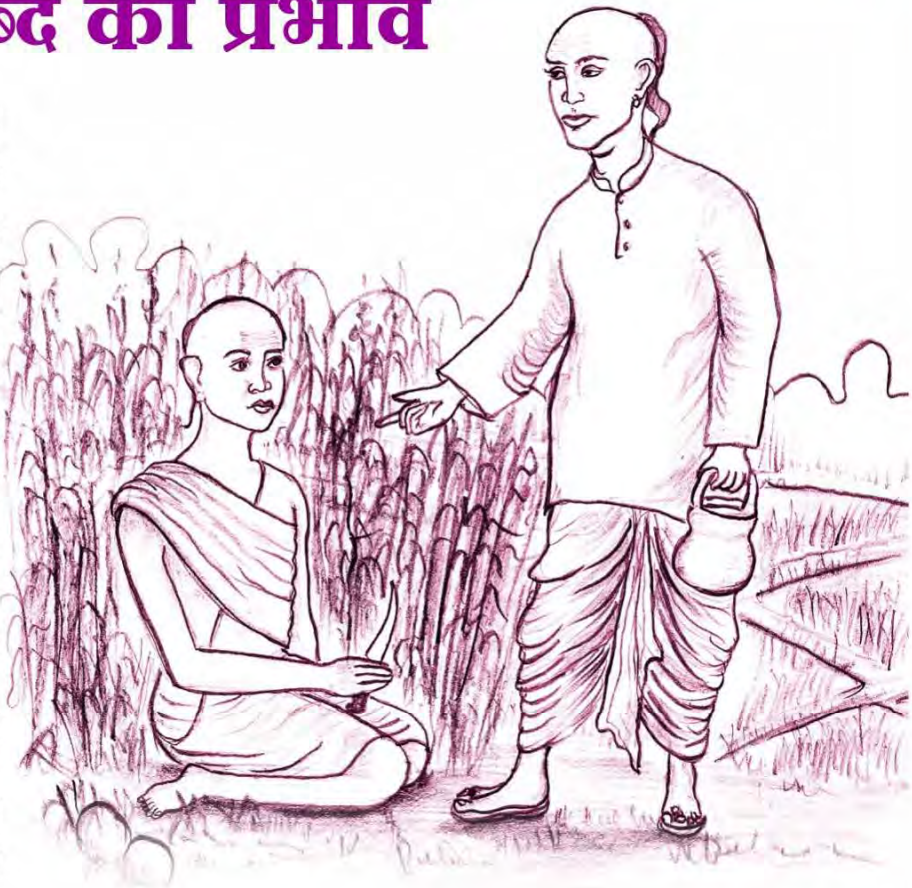
हाड़-मांस को देह मम, तापर जितनी प्रीति।
तिसु आधो जो राम प्रति, अवसि मिटिहि भवभीति ।।

रत्नावली के इन्हीं शब्दों ने उसके पति को संत तुलसीदास बना दिया। ध्रुव को अपनी सौतेली माँ के शब्द लग गये और वह चल पड़ा तो अटल पदवी पाने व ईश्वरप्राप्ति में सफल हो गया, महान हो गया।

ऋषभदेव मुनि के शब्दों ने सम्राट भरत को योगी भरत बना दिया :

गुरुर्न स स्यात्स्वजनो न स स्यात्
पिता न स स्याज्जननी न सा स्यात्।
दैवं न तत्स्यान्न पतिश्च स स्या-
न्न मोचयेद्यः समुपेतमृत्युम्।।

'जो अपने प्रिय संबंधी को भगवद्भक्ति का उपदेश देकर मृत्यु की फाँसी से नहीं छुड़ाता, वह गुरु गुरु नहीं है, स्वजन स्वजन नहीं है, पिता पिता नहीं है, माता माता नहीं है, इष्टदेव इष्टदेव नहीं है और पति पति नहीं है।' (भागवत : ५.५.१८)

अजनाभखंड के एकछत्र सम्राट भरत, जिनके नाम से हमारे देश का नाम 'भारत' पड़ा, अपने पिता के इन शब्दों को याद रखते हुए चल पड़े तो योगी भरत बन गये।

आप भी अपने घर की दीवार पर ये शब्द लिख दो : 'आखिर कब तक ?' 'इतना मिला... इतना पाया... फिर क्या ? आखिर कब तक ?'

पंडित नेहरू और उनकी सुपुत्री इंदिरा गांधी जिनके चरणों में मस्तक नवाते थे, उन आनंदमयी माँ को सत्संग सुनाने की योग्यता खेत की रखवाली करनेवाले शांतनु में कैसे आ गयी ?

शांतनुबिहारी के पिता पुरोहिती का कार्य करते थे और थोड़ी-बहुत खेती-बाड़ी भी करते थे।

उनके खेत में रोज एक बकरा घुस जाता था। वह इतना मजबूत और कुशल था कि खेत बिगाड़कर चला जाता और हाथ नहीं आता था। एक दिन ६-७ साल का शांतनु सुबह-सुबह हाथ में चाकू लेकर यह सोचकर खेत में छुप गया कि 'यह बकरे का बच्चा मेरा खेत खा जाता है। आज इसका पेट फाड़ डालूँगा।'

इतने में उसी गाँव के एक पंडित वहाँ से गुजरे। उनकी नजर शांतनु पर पड़ी तो पूछा : ''हे ब्राह्मणपुत्र शांतनु ! इस प्रकार छुपकर क्यों बैठे हो ? क्या बात है ?'' २-३ बार यही बात पूछी तो शांतनु ने सारी बात सच-सच बता दी।

पंडित : ''शांतनु ! यह काम तुम्हारे योग्य नहीं है। तुम ब्राह्मण हो। बकरे को चाकू मारना तो कसाई का काम है।''

'यह तुम्हारे योग्य नहीं है...' ये शब्द सुनकर शांतनु के हाथ से चाकू गिर पड़ा, उसके जीवन ने करवट बदली और वही शांतनु 'स्वामी अखंडानंद सरस्वती' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। पं. नेहरू और इंदिराजी की पूजनीया आनंदमयी माँ शांतनु से प्रकटे इन्हीं अखंडानंदजी के सत्संग में, चरणों में नतमस्तक होती थीं।

कितना सामर्थ्य छुपा है शब्दों में ! किताबें पढ़कर, लकीर के फकीर होकर अथवा अनपढ़ होकर भी क्या करोगे ? न अधिक ऐहिक पढ़ाई अच्छी है न अनपढ़ रहना अच्छा है। अच्छे-में-अच्छा तो परमात्मदेव का ज्ञान है, परमात्मप्रीति है, परमात्मरस है, वही सार है। अतः उसीका नाम-स्मरण करो, उसीके शब्द सुनो, उसीकी ओर ले जानेवाले शब्द बोलो-सोचो और उसीकी शांति, आनंद पाने का पूरा-पूरा प्रयत्न करो, मुक्तात्मा हो जाओ। ॐ आनंद... ॐ शांति... ॐ... ॐ... ॐ...

इन तिथियों का लाभ लेना न भूलें

२८ दिसम्बर : रविवारी सप्तमी (सूर्योदय से दोपहर १२-५५ तक)

१ जनवरी : पुत्रदा एकादशी (सब पापों को हरनेवाला व्रत। यह व्रत करनेवाले इस लोक में पुत्र पाकर मृत्यु के पश्चात् स्वर्गगामी होते हैं।)

४ जनवरी : चतुर्दशी-आर्द्रा नक्षत्र योग (सुबह ८-०१ से ९-२५ तक) (गुरुमंत्र एवं ॐकार का जप अक्षय फलदायी)

१४ जनवरी : मकर संक्रांति, उत्तरायण (इस दिन किया गया जप-ध्यान व पुण्यकर्म कोटि-कोटि गुना अधिक व अक्षय होता है। - पद्म पुराण)

१५ जनवरी : मकर संक्रांति (पुण्यकाल : सूर्योदय से सूर्यास्त तक)

१७ जनवरी : षट्तिला एकादशी (भागवत) (सर्व पापनाशक व्रत। इस दिन तिल का उबटन लगाना, तिलमिश्रित जल से स्नान, तिल से हवन, तिलमिश्रित जल का पान, तिलमिश्रित भोजन, तिल का दान - ये छः कर्म पाप का नाश करनेवाले हैं।)

२० जनवरी : मौनी-त्रिवेणी अमावस्या, अहमदाबाद आश्रम स्थापना दिवस (ति.अ.)

५ जनवरी से ३ फरवरी : माघ मास व्रत (माघ मास की हर तिथि पुण्यमय होती है और इसमें सब जल गंगाजल तुल्य हो जाते हैं। सतयुग में तपस्या से जो उत्तम फल होता था, त्रेता में ध्यान के द्वारा, द्वापर में भगवान की पूजा के द्वारा और कलियुग में दान-स्नान के द्वारा तथा द्वापर, त्रेता, सतयुग में पुष्कर, कुरुक्षेत्र, काशी, प्रयाग में १० वर्ष शुद्धि, संतोष आदि नियमों का पालन करने से जो फल मिलता है, वह कलियुग में माघ मास में अंतिम ३ दिन - त्रयोदशी, चतुर्दशी और पूर्णिमा को प्रातःस्नान करने से मिल जाता है।)

हीन व दुर्बल विचारों को त्याग दो !

(राष्ट्रीय युवा दिवस : १२ जनवरी)

एक आदमी रास्ते से गुजर रहा था । उसने देखा कि पेड़ के नीचे कुछ हाथी बँधे हैं । उसे बड़ा आश्चर्य हुआ कि इतने बड़े हाथी और छोटी-छोटी रस्सियों से बँधे हैं ! ये जरा-सा भी झटका मारें तो रस्सियाँ टूट जायेंगी ।

उसने महावत से कहा : ''क्या तुमने इतना खयाल नहीं किया कि इतने बड़े हाथियों को इतनी पतली रस्सियों से बाँधे नहीं रख सकते ! ये तो कभी भी तोड़कर चले जायेंगे !''

महावत हँसा और बोला : ''ऐसा नहीं है । ये छोटे-छोटे थे न, तब से इन्हें ऐसी ही रस्सियों से बाँधते आये हैं । तब बार-बार प्रयास करने पर भी रस्सी न तोड़ पाने के कारण इन्हें धीरे-धीरे विश्वास हो गया है कि ये इन रस्सियों को तोड़ नहीं सकते । अब भले ये ऐसी दसों रस्सियाँ तोड़ सकते हैं लेकिन ये कभी इन्हें तोड़ने का प्रयास ही नहीं करते ।''

वह व्यक्ति आश्चर्य में पड़ गया कि यह ताकतवर प्राणी सिर्फ इसलिए बंधन में पड़ा है क्योंकि इसे विश्वास हो गया है कि यह मुक्त नहीं हो सकता । विश्वास बहुत बड़ी चीज है । विश्वासो फलदायकः । जैसा विश्वास और जैसी श्रद्धा होगी, वैसा ही फल प्राप्त होगा । हम जैसा मन में ठान लेते हैं, वैसा ही होने लगता है । सच ही कहा है : मन के हारे हार है, मन के जीते जीत ।

उन हाथियों की तरह ही हममें से कितने ही लोग सिर्फ पहले मिली असफलता के कारण यह मान बैठते हैं कि 'अब हमसे यह काम हो ही नहीं सकता । अब हम सफल नहीं हो सकते ।' और अपनी ही बनायी हुई मानसिक जंजीरों में जकड़े-जकड़े पूरा जीवन गुजार देते हैं । अगर आपने मन में ठान लिया कि 'मैं यह नहीं कर सकता' तो फिर ब्रह्माजी भी आपकी कोई मदद नहीं कर सकते । याद रखिये, असफलता जीवन का एक शिक्षाप्रद पड़ाव है जो हमें यह महान सीख देता है कि शांत होकर अपने भीतर गोता मारो । गलत मान्यताओं, दुर्बल विचारों को खोजो और तत्परता से शास्त्र-सम्मत निश्चय व पुरुषार्थ करो तो सफलता जरूर मिलेगी ।

कई लोग मान्यता बना लेते हैं कि 'हम संसारी हैं, हमें ईश्वरप्राप्ति हो ही नहीं सकती ।' और ऐसी हीन मान्यताओं के कारण वे दुर्लभ मानव-जीवन को यों ही गँवा देते हैं । यदि इस मान्यता को छोड़ दें और किन्हीं ब्रह्मज्ञानी महापुरुष के मार्गदर्शन में इस मार्ग का अवलम्बन लें तो जिस लक्ष्य को पाने के लिए मनुष्य-जीवन मिला है उसे अवश्य ही पा सकते हैं ।

पूज्य बापूजी कहते हैं : ''वेदांत का यह सिद्धांत है कि हम बद्ध नहीं हैं बल्कि नित्य मुक्त हैं । इतना ही नहीं, 'बद्ध हैं' यह सोचना भी अनिष्टकारी है, भ्रम है । ज्यों ही आपने सोचा कि 'मैं बद्ध हूँ, दुर्बल हूँ, असहाय हूँ', त्यों ही अपना दुर्भाग्य शुरू हुआ समझो ! आपने अपने पैरों में एक जंजीर और बाँध दी । अतः सदा मुक्त होने का विचार करो । हीन विचारों को तिलांजलि दे दो और अपने संकल्पबल को बढ़ाओ । शुभ संकल्प करो । जैसा आप सोचते हो वैसे ही हो जाते हो । यह सारी सृष्टि ही संकल्पमय है । जैसा विश्वास और जैसी श्रद्धा होगी वैसा ही फल प्राप्त होगा ।''
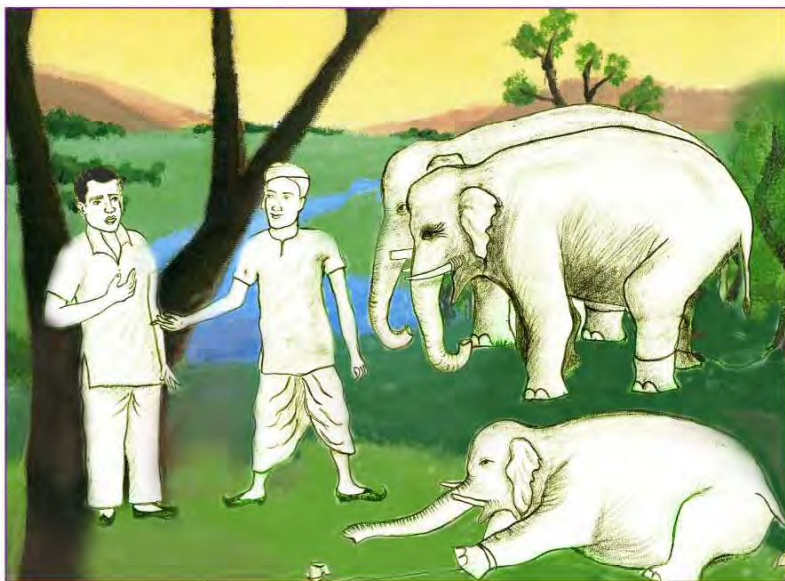
भगवान के लिए असहनीय क्या है ?
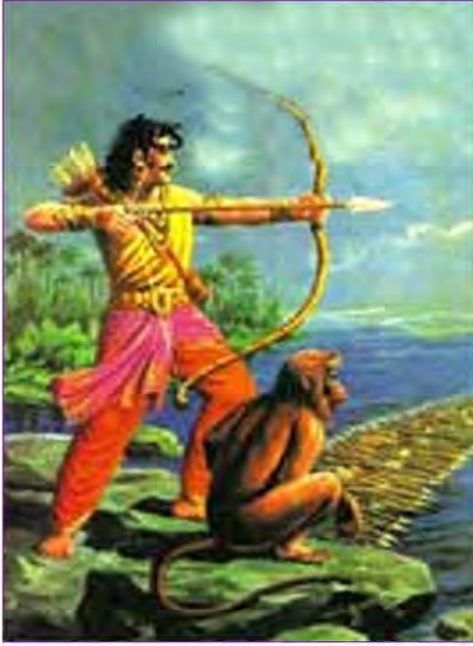
भारतीय सत्शास्त्र-शृंखला की रसमय पुष्पमाला का एक मनोहर पुष्प है 'श्री आनंद रामायण' ! वाल्मीकि एवं तुलसी कृत रामायणों की तरह यह भी अति रोचक, ज्ञानप्रद एवं रसमय शास्त्र है । आइये, भर लें एक घूँट इस सत्शास्त्र-अमृत का...

द्वापर युग की बात है । एक दिन अर्जुन समुद्र-तट पर घूम रहे थे, तभी उन्होंने एक पर्वत पर एक साधारण-सा वानर देखा, जो रामनाम जप रहा था । अर्जुन ने पूछा : ''हे वानर ! तुम कौन हो ?''

वह बोला : ''जिसके प्रताप से रामजी ने समुद्र पर सौ योजन लम्बा सेतु बनाया था, मैं वही वायुपुत्र हनुमान हूँ।''

इस तरह के वचन सुनकर अर्जुन भी गर्व से बोले : ''रामजी ने व्यर्थ ही इतना कष्ट उठाया । बाणों का सेतु क्यों नहीं बना लिया ?''

''हम जैसे बड़े-बड़े वानरों के बोझ से वह बाणों का सेतु टूट जाता, यही सोचकर उन्होंने ऐसा नहीं किया ।''

''यदि वानरों के बोझ से सेतु के टूट जाने का भय हो तो उस धनुर्धारी की विद्या की क्या विशेषता ! मैं अभी अपने कौशल से बाणों का सेतु बनाता हूँ, तुम उस पर आनंद से नाचो-कूदो ।''

''यदि मेरे पैर के अँगूठे के बोझ से ही आपका बनाया सेतु टूट जाय तो ?''

''यदि तुम्हारे भार से सेतु टूट जायेगा तो मैं चिता जलाकर अपने प्राण त्याग दूँगा । अब तुम भी कोई शर्त लगाओ ।''

''यदि मैं अँगूठे के भार से तुम्हारे सेतु को न तोड़ सका तो तुम्हारे रथ की ध्वजा के पास बैठकर जीवनभर तुम्हारी सहायता करूँगा ।''

तब अर्जुन ने अपने बाणों से एक मजबूत सेतु बना दिया । हनुमानजी ने उनके सामने ही अपने पैर के अँगूठे से उसे तोड़ दिया । खिन्न होकर अर्जुन ने वहीं चिता बनायी और हनुमानजी के रोकने पर भी वे उसमें कूदने को तैयार हो गये । तभी भगवान श्रीकृष्ण एक ब्रह्मचारी का रूप धरकर आये और अर्जुन से चिता में कूदने का कारण पूछा । अर्जुन ने सारी बात बता दी ।

ब्रह्मचारी : ''तुम लोगों ने जो शर्त लगायी थी उसका कोई साक्षी नहीं था, अतः वह निःसार थी । अब मैं साक्षी हूँ, तुम दोनों का मैं निर्णय करूँगा ।''

अर्जुन ने पुनः सेतु की रचना की । हनुमानजी सेतु को पूर्ववत् अँगूठे से दबाने लगे लेकिन जब कुछ नहीं हुआ तो उन्होंने अपनी पूरी शक्ति लगा दी पर सेतु तिलभर भी नहीं हिला । हनुमानजी समझ गये कि ये साधारण ब्रह्मचारी नहीं हैं । हनुमानजी ने प्रणाम करके पूछा : ''प्रभु ! आप कौन हैं ?'' ब्रह्मचारी भगवान कृष्णरूप में आ गये और हनुमानजी को हृदय से लगा लिया ।

भगवान : ''हनुमान ! त्रेता में मैंने तुम्हें वरदान दिया था कि द्वापर के अंत में तुम्हें मैं कृष्णरूप में दर्शन दूँगा । इस सेतु के बहाने मैंने अपना वरदान आज पूरा कर दिया । मैंने ही सेतु के नीचे अपना सुदर्शन चक्र लगा दिया था, जिससे यह नहीं टूटा । तुम्हें अपने बल का गर्व हो गया था, इस कारण तुम पराजित हुए हो । इसी तरह अर्जुन को अपनी विद्या का अहंकार हो गया था इसलिए तुमने अर्जुन की धनुर्विद्या व्यर्थ कर दी । अब तुम दोनों का गर्व नष्ट हो गया है । हनुमानजी ! तुम अपनी शर्त के अनुसार अर्जुन के रथ की ध्वजा में प्रतीक के रूप में रहोगे । आज से अर्जुन 'कपिध्वज' के नाम से जाने जायेंगे ।''

श्री हनुमानजी, अर्जुन एवं भगवान श्रीकृष्ण ने इस लीला के द्वारा हमें यह संदेश दिया है कि भगवान सब कुछ सहन कर लेते हैं पर अपने भक्त का अहंकार नहीं ।

ज्ञानी हैं महादानी

आठ प्रकार के दान होते हैं । अन्नदान, भूमिदान, कन्यादान, गोदान, गोरस-दान, सुवर्णदान, विद्यादान और आठवाँ है अभयदान । लेकिन भगवद्-प्रसाद दान सर्वोपरि दान है जो तीन प्रकार का होता है । उसमें जो क्रियाजन्य दान है - रुपया-पैसा, सेवा... वह देश, काल, पात्र देखकर किया जाता है । दूसरा जो भक्तिजन्य दान है, उसमें पात्र-अपात्र कुछ नहीं, भगवान के नाते भक्तिदान करो, उसे शांति मिले, प्रीति मिले, भगवान की प्यास जगे । प्यास और तृप्ति, प्यास और तृप्ति... करते-करते वह परम तृप्त अवस्था को पहुँच जायेगा, यह भक्तिदान है । भक्तिदान में पात्रता के सोच-विचार की आवश्यकता नहीं रहती । सभी पात्र हैं, सभी भगवान के हैं, अल्लाह के हैं । तीसरा होता है ज्ञानदान । ज्ञान तीन प्रकार का है, इन्द्रियगत ज्ञान, बुद्धिगत ज्ञान और इन दोनों को प्रकाशित करनेवाला वास्तविक ज्ञान । उस वास्तविक ज्ञान - ब्रह्मज्ञान का दान दिया जाता है । इन्द्रियाँ दिखाती हैं कुछ, जैसे आकाश कड़ाही जैसा दिखता है, मरुभूमि में पानी दिखता है । इन्द्रियगत ज्ञान भ्रामक है, सीमित भी है, आकर्षण भी पैदा कर देता है और हलकी बात इन्द्रियाँ तुरंत खींच लेती हैं । पान-मसाला एक बार खाया तो चस्का लग जायेगा लेकिन भगवान की तरफ एक बार चले तो हमेशा के लिए चलता रहेगा ऐसा कोई जरूरी नहीं है । इन्द्रियाँ विकारों की तरफ जल्दी खिसकती हैं और अच्छाई की तरफ तो सात दिन अभ्यास करो तब उस तरफ चलने की उनको आदत पड़ती है । तो इन्द्रियगत ज्ञान, बुद्धिगत ज्ञान - ये दोनों जिस शुद्ध ज्ञान, आत्मज्ञान से प्रकाशित होते हैं, उस ज्ञान का दान सर्वोपरि है । उस ज्ञान का दान करनेवाले को ऐसा भी नहीं लगता कि मैं यह दान कर रहा हूँ और ये लोग हमसे दान ले रहे हैं । वे महादानी तो आत्मभाव से, आत्मदृष्टि से सबको देखते हैं ।

आठ प्रकार के दानों में आखिरी दान है भगवद्भक्ति या ज्ञानदान, सत्संगदान । सत्संगदान में तीन विभाग हुए कर्मयोग, भक्तियोग, ज्ञानयोग ।

कर्मयोग में तो पात्रता के अनुसार जैसे ड्राइवर है तो उसको ड्राइवर की सेवा देंगे । ईमानदार है तो समिति में खजांची की सेवा देंगे । भक्तियोग में पात्र-कुपात्र नहीं देखा जाता । भक्ति का, भगवद्भाव का ज्ञान तो सबको दिया जाता है । जो आज्ञापालन में तत्पर हैं उनको तो ज्ञानदान ऐसा पच जाता है, जैसे सूरज होते ही प्रकाश दिखे । ज्ञानदान में भी एक ऐसी पराकाष्ठा है गुरुकृपा की और वेद भगवान की कि आप जप करो, योग करो, तप करो सब अच्छा है लेकिन भक्तिमार्ग में 'मैं भगवान का हूँ, भगवान मेरे हैं' - यह दृढ़ निष्ठा जप-अनुष्ठान व मालाओं से भी कई गुना ज्यादा फायदा करती है । जप-अनुष्ठान में भी यही निष्ठा रखें । (शेष पृष्ठ २७ पर)

हम करते हैं संकल्प : 'मातृ-पितृ पूजन दिवस मनायेंगे'

१४ फरवरी को 'वेलेंटाइन डे' मनाने की पाश्चात्य कल्चर की कुप्रथा से समाज के भावी कर्णधारों की रीढ़ कमजोर होती देख दूरद्रष्टा लोकहितैषी संत श्री आशारामजी बापू का हृदय द्रवीभूत हुआ और ९ वर्ष पूर्व विश्व-मांगल्य के उद्देश्य से पूज्यश्री ने इस दिन को 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' के रूप में मनाने की शुरुआत की। तब से प्रतिवर्ष इस कल्याणकारी पर्व को विश्वभर में करोड़ों लोग मनाते हैं। इन विश्वात्मा संत द्वारा आरम्भ किये गये इस महायज्ञ में प्रत्येक साधक/साधिका एवं अन्य सज्जन निम्नलिखित में से कम-से-कम एक संकल्प लेकर संस्कृति व समाज के उत्थान में अपनी आहुति अवश्य अर्पित करें।

(१) मैं अपने क्षेत्र के विद्यालयों-महाविद्यालयों के प्राचार्यों से मिलूँगा/मिलूँगी और उन्हें १४ फरवरी को 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' मनाने के लिए प्रेरित करूँगा/करूँगी। अनुमति मिलने पर वहाँ पुस्तक-अनुसार पूजन-विधि करवाऊँगा/करवाऊँगी।

(२) आसपास के २५-५० बच्चों व उनके माता-पिता को एकत्र कर यह दिवस मना के संस्कार-सुवास महकाऊँगा/महकाऊँगी।

(३) अपनी क्षमतानुसार अड़ोस-पड़ोस एवं विद्यालयों में 'मातृ-पितृ पूजन' पुस्तक पहुँचाऊँगा/पहुँचाऊँगी और बाँटने हेतु सज्जनों को प्रेरित करूँगा/करूँगी।

पूज्य बापूजी कहते हैं : ''वेलेंटाइन डे मनाने की अपेक्षा 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' मनायें। इसकी पुस्तक पढ़ें और अड़ोस-पड़ोस के बच्चों में भी अपने माँ-बाप के प्रति सद्भाव भरने के भगीरथ कार्य में आप भी थोड़ा समय निकाल लें, जिससे आपके और पड़ोस के बच्चे पाश्चात्य गंदगी से बचकर भारतीय ऋषि-परम्परा का प्रसाद पायें और दूसरों तक पहुँचायें।''

विशेष : 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' पर आधारित कम-से-कम १००० पुस्तक या १०० डीवीडी लेने पर आप उन पर सौजन्य के रूप में अपना नाम या फर्म आदि का नाम-पता छपवा सकते हैं।

सम्पर्क : बाल संस्कार विभाग, अहमदाबाद, दूरभाष : (०७९) ३९८७७७४९/५०/५१

(पृष्ठ २६ का शेष) ऐसे ही ज्ञानमार्ग में है। 'स्थूल शरीर से क्रिया होती है, यह जगत दिखता है और व्यवहार होता है। सूक्ष्म शरीर में सपने आते हैं, कारण शरीर में नींद आती है। 'मैं' इन सबको जाननेवाला विभु, व्यापक, अबदल आत्मा हूँ, शाश्वत हूँ।' - ऐसा जो निश्चय कर लेता है, उसकी सभी साधनाओं की पराकाष्ठा जल्दी हो जाती है।

आ जाओ गुरुदेव कि कितनी देर हुई

आ जाओ गुरुदेव कि कितनी देर हुई ।
सुनो भक्तों की पुकार कि कितनी देर हुई ।।
ये आँखें मेरी बरस रही हैं ।
गुरु-दर्शन को तरस रही हैं ।
अब दर्शन दो साकार कि कितनी देर हुई ।।
आ जाओ...
धैर्य हमारा टूट रहा है ।
प्राण ये तन से छूट रहा है ।
ओ प्राणों के आधार कि कितनी देर हुई ।।
आ जाओ...
तुम बिन आश्रम सूना-सूना ।
युग सम लागे दिन और रैना ।
अब विनती सुनो करतार कि कितनी देर हुई ।।
आ जाओ...
भक्तों की नैया खेनेवाले ।
भूल गये क्यों ओ रखवाले ?
मेरी नैया लगाओ पार कि कितनी देर हुई ।।
आ जाओ...
लीलाधर हो लीला करते ।
भक्तों के हित सब कुछ सहते ।
हुई लीला अपरम्पार कि कितनी देर हुई ।।
आ जाओ...
दूरी गुरुवर सही न जाती ।
तुम ही दीपक तुम ही बाती ।
सूझे राह नहीं सरकार कि कितनी देर हुई ।।
आ जाओ...
भूल हुई क्या हमसे गुरुवर ।
दूर हुए क्यों हमसे रहबर ?
हम बच्चे नादान कि कितनी देर हुई ।।
आ जाओ...
हमने तो सब कुछ कर देखा ।
सफल हुए नहीं खाये धोखा ।
तुम समरथ सरताज कि कितनी देर हुई ।।
आ जाओ...
आ जाओ गुरु, आ जाओ-२

- संजय भाई, दिल्ली

धनभागी हैं वे जिनके जीवन में उन्नति का व्रत है, चाहे पूनम व्रत हो, आत्मा-परमात्मा को पाने का व्रत हो, सुख-दुःख में सम हने का व्रत हो या ब्रह्मचर्य का व्रत हो। व्रत से दृढ़ता, दृढ़ता से श्रद्धा और श्रद्धा से परमात्मप्राप्ति।

श्रद्धापूर्वाः सर्वधर्मा मनोरथफलप्रदाः।
श्रद्धया साध्यते सर्वं श्रद्धया तुष्यते हरिः॥

यह शास्त्रवचन तुमने कई बार सुना

होगा, (आश्रम के) साहित्य में भी है। पिछले वर्ष दिवाली के शिविर में बच्चों की जो संख्या थी इस वर्ष उससे ११ गुनी !

तो हे सुशिष्यो ! इस पूनम के पर्व पर एक संदेशा पक्का कर लो : 'मैं आत्मा हूँ, चैतन्य हूँ, साक्षी हूँ। कहीं-कहीं विज्ञानी सृष्टि की उत्पत्ति करीब १३८० करोड़ वर्ष पुरानी बताते हैं लेकिन उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय हो-होकर मिट जाते हैं फिर भी जो नहीं मिटता उस अपने असली स्वरूप को जानूँगा।'

आज तक जीवन में क्या-क्या होकर मिट गया, उसको जाननेवाला तुम्हारा आत्मा अमिट है। तन बदलता है, मन बदलता है, मति बदलती है, उनकी बदलाहट का साक्षी कौन है ? युग बदलते हैं, प्रलय में कुछ नहीं रहता, उसको जाननेवाला कौन है ? वही ! गहरी नींद में कुछ नहीं होता, न लेना-देना, न मन, न बुद्धि फिर भी तुम रक्त-संचार करते हो, शरीर की थकान मिटाते हो, तुम वही चैतन्य हो। उसी चैतन्य को जानने का इरादा किया था श्री हनुमानजी ने और राम-शरण पहुँचे थे। श्रीकृष्ण के प्यारे अर्जुन को विराट रूप के दर्शन के बाद भी इस आत्मज्ञान की प्रसादी श्रीकृष्ण ने दी तब अर्जुन कहते हैं :

नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादान्मयाच्युत। (गीता : १८.७३)

अब तो यहाँ जोधपुर के एकांत में ऐसा आत्मप्रसाद छलक रहा है, जिसका शब्दों में वर्णन नहीं हो सकता। सत्पात्र, सत्‌शिष्य, दृढ़व्रती, संयमी, सदाचारी उस परमात्म-प्रसाद को जल्दी चखेंगे। ॐ शांति... ॐ आनंद... ॐ साक्षी...

संसार सपना, साक्षी चैतन्य परमात्मा अपना...

शिवजी के वचन सत्य हैं : उमा कहउँ मैं अनुभव अपना।
सत हरि भजनु जगत सब सपना॥ (श्री रामचरित. अर.कां. : ३८ ख.३)

भजन का मतलब अपने आत्मा का रस आ जाय। दुःख मनोगामी होता है, सच्चा सुख आत्मगामी होता है। सत्संग में बताया है उस प्रकार से रात्रि का शयन व सुबह का जागरण आत्मगामी कर दो। पूनमव्रतधारी ! तुम्हें जो आध्यात्मिक अनुभव हुए हैं उन्हें लिखने बैठोगे तो पोथियाँ भर जायेंगी। सारे अनुभवों के उद्‌गम व साक्षी का खजाना पाओ बस, ॐ आनंद... ॐ माधुर्य...

धन्या माता पिता धन्यो... शिवजी के वचन समझ लेना।

माघ-स्नान का लाभ ले सको तो ले लो। शरीर ठंडी न सह सके तो सूर्योदय से पहले मन से स्नान कर लेना।

सुखमय गृहस्थ-जीवन के अनमोल सूत्र

देवर्षि नारदजी कहते हैं : ''युधिष्ठिर ! गृहस्थ-जीवन में मनुष्य को जो १७वाँ सद्गुण अपने में लाना चाहिए वह है अभिमानपूर्ण प्रयत्नों का फल उलटा ही होता है - ऐसा विचार।'' निष्काम भाव से सत्कर्म करे और सत्कर्म का फल ईश्वर को अर्पण करे। व्यक्ति फल का भोक्ता नहीं होगा तो उसकी आसक्ति मिटेगी और ईश्वर में विश्रांति मिलेगी।

''**१८वाँ है मौन।**'' बकवाद का त्याग। बिनजरूरी न बोले, असार बात न कहे। चुभनेवाली बात तो न कहे लेकिन व्यर्थ की भी बात न कहे। 'देख लो यह गुलाब है।' - यह तो आप जानते हैं, मैंने आपके कान खराब किये और अपनी जुबान खराब की। मेरा बोलना व्यर्थ हो गया। हाँ, 'यह मखमली गुलाब है, गुलकंद का गुलाब फलाना होता है। मखमली गुलाब में ऐसा-ऐसा गुण है...', तब तो मैंने ठीक बोला। व्यर्थ का न बोलो आपस में, व्यर्थ का न सुनो, व्यर्थ का न सोचो तो सार्थक में विश्रांति मिल जायेगी।

''**१९वाँ है आत्मचिंतन।**'' आत्मा क्या है ? परमात्मा क्या है ? संसार तो बदलता है फिर भी जो नहीं बदलता वह परमेश्वर कैसा है, कैसे मिले ? - ऐसा बुद्धि में डाल दो।

''**२०वीं बात** - प्राणियों में अन्न आदि का यथायोग्य विभाजन। और **२१वीं बात** है सभी प्राणियों में, विशेषकर मनुष्यों में अपने आत्मा तथा इष्टदेव का भाव।'' जो भगवान की भक्ति में ऊँचे उठे हैं, वे भगवत्स्वरूप हैं।

फिर नवधा भक्ति -

''**२२वीं बात** है भगवान के नाम-गुण-लीला आदि का श्रवण।

२३वीं बात - भगवन्नाम कीर्तन।'' गृहस्थियों को, संसारियों को, साधुओं को, सभीको भगवन्नाम-कीर्तन करना चाहिए। अपने जीवन में जप के लिए समय रखें, जप का नियम करें। भगवान की कीर्ति का गान करते ही वृत्ति भगवदाकार होती है।

''**२४वीं बात** - अपने जीवन में हरि-लीला का सुमिरन।'' भगवान की लीलाओं का सुमिरन करो। ''**२५वीं बात** - भगवान की सेवा करो।'' भगवान कहाँ हैं कि हम सेवा करेंगे ? भगवान ने कहा कि 'मैं कहाँ हूँ देख लो पता - भोक्तारं यज्ञतपसां सर्वलोकमहेश्वरम्। ईश्वरों के ईश्वर, ब्रह्मा-विष्णु-महेश के आत्मस्वरूप में और गरीब-गुरबे, मोहताज तथा माता-पिता के आत्मस्वरूप में बस रहा हूँ, वह मैं महेश्वर हूँ। अनंत ब्रह्मांड के रूप में, पशु-पक्षियों के रूप में, पंचभूतों में और प्राणिमात्र में बस रहा हूँ, दिख रहा हूँ।' भगवान की सेवा करो। सासु के अंदर भगवान है, बहू या गरीब के अंदर मेरा भगवान है, इस भाव से थोड़ा समय सेवाकार्य में लगाओ।

''**२६वाँ सद्गुण है** - भगवत्पूजन।'' ध्यान-भजन-पूजन आदि करें।

''**२७वाँ - नमस्कार।**'' विनम्र भाव रखें। और ''२८वाँ है दास्यभाव।''

''**२९वाँ है सख्यभाव**'' अर्थात् सुहृद भाव और ''**३०वाँ सद्गुण है आत्मसमर्पण।**'' तन-मन-धन जिस परमेश्वर का है, उसीको अर्पण करके उसका केवल उपयोग करें।

इस प्रकार इन ३० सद्गुणों से गृहस्थ-जीवन में भी व्यक्ति परमात्म-सुख को, परमात्म-ज्ञान को, परमात्म-तत्त्व को प्राप्त करके मुक्तात्मा, महान आत्मा हो जाता है। (समाप्त)

मानव-जीवन के लिए परम हितकारी गौमाता

अर्थव्यवस्था की दृष्टि से गौ-महिमा

कृषि के लिए गौ एवं बैलों की आवश्यकता है। उनका संरक्षण, पालन एवं संवर्धन जो देश करेगा, वह समृद्ध एवं ऐश्वर्यशाली होगा । गोबर की खाद से पृथ्वी की उर्वरक क्षमता में वृद्धि होती है। गोबर एवं गोमूत्र खेती को उत्तम पोषण देते हैं। बैल-ऊर्जा ने कृषि, भार-वाहन, परिवहन तथा ग्रामोद्योग के लिए सम्पूर्ण तकनीक विकसित करने में सहायता की है।

गाय के दूध, घी आदि द्रव्यों के निर्यात से देश को अच्छी आमदनी हुई है । गोमूत्र का प्रयोग आयुर्वेदिक दवाओं में किया जाता है तथा गोबर व अन्य गव्य पदार्थों से तैयार सात्त्विक धूप, अगरबत्ती, हवन-सामग्री आदि से हस्तोद्योग समृद्धिवान हुआ है।

शास्त्रवेत्ता ब्रह्मनिष्ठ संत पूज्य बापूजी कहते हैं : ''लोग गाय की सेवा नहीं करते। उन्हें गाय के दूध की कद्र नहीं है। इसलिए लोग अशांत हैं और बीमारी एवं रोगों में आबद्ध हैं। गाय पालनेवाले के घर में जितनी तंदुरुस्ती होगी, उतनी गाय का मांस खानेवाले के घर में नहीं होगी, बिल्कुल पक्की बात है !

चार लाख बत्तीस हजार आदमी एक समय भोजन कर सकें, उतनी आय एक गाय के जीवनभर के गोबर, झरण व दूध से हो जाती है। गाय एक दिन में ७ लीटर झरण देती है। यदि उसकी दर २ रुपये लीटर भी मानें तो कम-से-कम १४ रुपये का तो गोमूत्र हो गया। उसीका फिनायल बनाया जाय तो ५ रुपये लीटर के हिसाब से

३५ रुपये का फिनायल हो जायेगा । गाय तो अपनी ही आय से जी सकती है । उसके गोबर, कंडे अथवा तो गोबर से बनी हुई अगरबत्ती का फायदा तो अलग ही है ।''

अतः जो गायें दूध नहीं देती हों, उन्हें भी कसाइयों को न बेचें।

गौ-हत्या के महापाप से बचें

वेद में कहा गया है : 'गौ मा हिंसी ।' अर्थात् गाय हिंसा योग्य नहीं है परंतु दुर्भाग्यवश आज भारत में पैसों के लोभ से गाय, बैल, बछड़े सभी कट रहे हैं । खेती यंत्रों की मदद से होने के कारण किसान अपने पशु कसाइयों को बेच रहे हैं । तो क्या इससे किसान सुखी हैं ? बिल्कुल नहीं । आज खेती के लिए उन्हें डीजल, पेट्रोल, रासायनिक खाद पर निर्भर होना पड़ रहा है, जिससे खेती का खर्च बढ़ गया है। पैदावार के दाम गिरने से खेती घाटे का धंधा बन गयी है । किसान कर्ज में डूब गये हैं । यह एक विकराल समस्या बन गयी है। गौ-हत्या के महापाप के कारण आज विश्वभर में प्राकृतिक आपदाएँ, जैसे - भूकम्प, बाढ़, अकाल आदि बढ़ रही हैं।

इसके विपरीत पशु-आधारित अर्थतंत्र से क्या लाभ हैं, इसकी एक झाँकी बांदीपुर क्षेत्र के उदाहरण से देखने को मिलती है। कर्नाटक में बांदीपुर क्षेत्र में स्थित हंगला गाँव के किसान कॉफी उत्पादक कम्पनियों को खाद के लिए गोबर बेचकर प्रतिवर्ष करीब ६५ लाख रुपये कमाते हैं। जंगल की सरहद के पास ऐसे ७४ गाँव हैं, जिनका अर्थतंत्र गौवंश पर निर्भर रहकर खूब समृद्धि हासिल कर रहा है।

निर्दोष, मातृस्वरूपिणी गाय का कत्ल अशांति और देर-सवेर विनाश को निमंत्रण देता है । जिस गौमाता की प्रसन्नतामात्र से स्वास्थ्य, लक्ष्मी, संतानोत्पत्ति और सुख-शांति आदि सहज में ही प्राप्त हो जाते हैं, ऐसी गौमाता का वध रोकने के लिए और उसके पालन-संवर्धन के लिए हम सबको कटिबद्ध होना चाहिए।

गाय के दूध, दही, घी व झरण का अधिक-से-अधिक उपयोग करें। डेयरियों व दुकानों में गौ-उत्पादों की ही माँग करें । पोंछा लगाने के लिए गोसेवा फिनायल अथवा गोझरण का प्रयोग करें । किसान रासायनिक खाद की जगह गोबर से बनी केंचुआ खाद का उपयोग करें। जिनके पास गौ-पालन के लिए स्थान हो, वे गायों का पालन-पोषण कर शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक लाभ उठायें। गाँवों व शहरों में सस्ता व स्वास्थ्यवर्धक ईंधन देनेवाले गोबर गैस प्लांट अन्य महँगे ईंधनों का अच्छा विकल्प हैं।

पूज्य बापूजी कहते हैं : ''आप गाय की सेवा करते हैं तो आप सचमुच बड़े पुण्यात्मा हैं। भले धन कम हो, मकान, महल नहीं हों लेकिन आपके घर में जो सात्त्विकता होती होगी, हृदय में जो खुशी रहती होगी, वह सात्त्विकता व खुशी करोड़पतियों के घर में भी नहीं होगी। गाय की सेवा तो पुण्यात्मा बनाती है, अकाल मृत्यु टालती है।'' (समाप्त)

कुक्कुटासन

लाभ : इसके अभ्यास से हाथ, कोहनी, सम्पूर्ण भुजाओं में असीम बल आता है, कंधों की मांसपेशियों को शक्ति प्राप्त होती है एवं वक्ष का विस्तार होता है। मूलाधार चक्र के उद्दीपन के कारण इसका उपयोग कुंडलिनी जागरण के लिए किया जाता है। जिनके कार्य में हाथों पर अधिकांश जोर पड़ता हो उन्हें यह आसन अधिक करना चाहिए। इस आसन के अभ्यास से आलस्य कम आता है और थोड़े ही सोने से अधिक विश्राम मिलता है। कुक्कुट (मुर्गे) की भाँति ब्राह्ममुहूर्त में ही निद्रा खुल जाती है। जिनका सीना कमजोर या मांसहीन हो और जिनकी बाहु टेढ़ी हो, उनको इस आसन का अभ्यास अवश्य करना चाहिए। लिखते समय जिनके हाथों में कम्पन हो अथवा थक जाते हों उनके लिए भी यह आसन लाभदायी है।

विधि : पद्मासन में बैठकर हाथों को पिंडलियों एवं जाँघों के बीच से निकाल लें। हथेलियों को जमीन पर दृढ़ता से इस प्रकार रखें कि उँगलियाँ सामने की ओर रहें। हाथ के दोनों पंजों के बीच ४ अंगुल का अंतर रहे। हाथों को सीधा एवं आँखों को सामने किसी बिंदु पर स्थिर रखें और शरीर को धीरे-धीरे जमीन से ऊपर उठाते हुए जाँघों को कोहनियों तक लायें। पूरा शरीर केवल हाथों पर संतुलित रहना चाहिए। पीठ सीधी रखें। जब तक आराम से रह सकते हों, तब तक अंतिम स्थिति में रहें। फिर जमीन पर वापस आ जायें और धीरे-धीरे हाथों एवं पैरों को शिथिल बनायें। पैरों की स्थिति बदलकर इस अभ्यास को दोहरायें।

श्वास : शरीर को ऊपर उठाते हुए श्वास छोड़ें। अंतिम स्थिति में सामान्य श्वासोच्छ्वास। शरीर को नीचे लाते हुए श्वास छोड़ें।

खेल-खेल में बुद्धि बढ़ायें

नीचे दिये गये प्रश्नों के उत्तर वर्ग-पहेली में खोजिये।

(१) कौन-सा संबंध सर्वश्रेष्ठ है ?
(२) कौन-सा ज्ञान सबसे बड़ा है ?
(३) कौन-सा व्रत श्रेष्ठ है ?
(४) शास्त्रों में सर्वश्रेष्ठ शास्त्र कौन-से हैं ?
(५) सबसे श्रेष्ठ देव कौन हैं ?
(६) कौन-सी सब्जी श्रेष्ठ है ?
(७) किस प्राणी का दूध श्रेष्ठ है ?
(८) सब तपों में श्रेष्ठ तप क्या है ?
(उत्तर अगले अंक में प्रकाशित होंगे।)

भा	ई	ब	ह	न	ज	लौ	की	ह	ता	का	जू
माँ	क	य	श्री	स	री	क	र	जी	बा	क	ज
व	ख	ए	का	द	शी	त्र	ते	जी	क	श्	रा
न	क्षा	का	मै	थी	रा	ई	न	म	क	य	धा
गा	वे	द	श्री	म	द्	भ	ग	व	द्	गी	ता
य	म	ता	न	म	शा	ऊ	ठ	चा	ए	ल	रि
च	र	गु	रु	शि	ष्य	प	ब	ध	का	भैं	स
श्	क	रि	श्री	ति	सि	श	साँ	ईं	ग्र	बा	क
ध	वा	का	आ	ट	म	दे	व	मा	ता	प	री
भा	सं	त	त्म	कॉ	ले	ज	वि	ज्ञा	न	र	न
भी	च	फ	ज्ञा	आ	म	बु	ल	ती	स	व	ख
दे	व	र	न	ऊ	ट	बी	ए	यो	ध्	ल	जी

भक्तों की सेवा करें भगवान - पूज्य बापूजी

एक बार स्वामी विवेकानंद उत्तर भारत की यात्रा करने निकले। उन्होंने अयाचक व्रत रखा था कि माँगेंगे नहीं, मिलेगा तो खायेंगे; जहाँ रहना पड़े रह लेंगे, जहाँ नींद आयेगी सो लेंगे। यात्रा करते-करते रेलगाड़ी बदलने के लिए वे २-४ घंटे किसी जंक्शन पर ठहरे। उनके पास तीसरे दर्जे की टिकट थी। पहले तीन दर्जे होते थे। गरीब लोग तीसरे दर्जे में मुसाफिरी करते थे सस्ती टिकट पर। हमने भी तीसरे दर्जे में यात्रा की है।

जब वे डिब्बे में जा के बैठे तो पहने हुए एक जोड़ी भगवे कपड़े और सिर्फ टिकट के साथ उन्हें बैठा देख उनके पास बैठा हुआ एक व्यापारी उनका मजाक उड़ाता रहा। १२-१५ घंटे की यात्रा के बाद जहाँ दोनों को उतरना था वहाँ उतरे। जहाँ लोग छाया में बैठे थे उधर जाकर विवेकानंदजी बैठने लगे तो उनकी वेशभूषा देखकर चौकीदार ने भगाया : ''उधर जाओ बाबा ! इधर नहीं, इधर नहीं !''

जब चौकीदार ने उनको विश्रामागार में नहीं बैठने दिया तो विश्रामागार के बाहर जहाँ दीवाल की थोड़ी-सी छाया थी, वहाँ पर वे खम्भे को टेका देकर बैठ गये। वह व्यापारी भी इनके सामने आकर छावनी में बैठ गया और जो कुछ मिठाई, जलेबी, पकौड़े आदि चरपरा लिया था वह उनको दिखा-दिखा के खाने लगा क्योंकि उनके पास तो कुछ खाने को था नहीं। कइयों की ऐसी नीच बुद्धि होती है कि किसीको चिढ़ाकर, किसीको दुःखी करके मजा लेना चाहते हैं। दूसरों को सताकर सुखी होना इसको मोहिनी प्रकृति बोलते हैं। लेकिन विवेकानंदजी के चेहरे पर एक शिकन तक नहीं आयी।

वह व्यापारी तो खा-पीकर जरा बैठा, विवेकानंदजी को देखता रहा। इतने में एक स्वस्थ हलवाई हाथ में गठरी, मटकी, लोटा, बगल में चटाई और अन्य सामान लेकर उनके पास आया और प्रणाम करके बोला : ''स्वामीजी ! भोजन करिये।''

स्वामी विवेकानंद बोले : ''भाई ! मैं तो पहली बार इस स्टेशन पर आया हूँ। दूसरा और कोई आपका स्वामीजी होगा तो उसके लिए ले जाओ।''

''नहीं-नहीं, मैं हलवाई हूँ । मैं भोजन करके लेटा था । दोपहर को जरा झपकी लेता हूँ । तो रामजी ने सपना दिया कि 'मेरा संन्यासी साधु रेलवे स्टेशन पर आया है । वह भूखा है, जा, उठ !' मैंने सोचा कि 'यह क्या पता क्या है ?' मैं फिर से लेटा तो फिर मेरे रामजी ने कहा, 'जा, क्यों सोता है ? आलस्य क्यों करता है ? मेरे संन्यासी को भूख लगी है ।' तो मैंने जल्दी-जल्दी भोजन बनवाया फिर दुकान से ये मिठाइयाँ ले के आया ।''

वह व्यापारी सोचने लगा कि 'मैं तो १-२ मिठाई खाकर अपने को बड़ा भाग्यशाली मानता था पर इनके लिए तो इतनी सारी मिठाइयाँ ! और ये गरमागरम भोजन और चटाई ! और रामजी ने हलवाई को सपना दिया कि मेरा साधु भूखा है !! मैं तो इनको साधारण समझकर इनका मजाक कर रहा था लेकिन ये तो भगवान और गुरु के रस में ऐसे रसवान हैं कि इनके खाने-पीने की तो गुरु महाराज और भगवान ही व्यवस्था कर रहे हैं !'

व्यापारी का मन पानी-पानी हो गया । बार-बार संत-दर्शन करने का उसका पुण्य फला और उसने स्वामी विवेकानंद के चरणों की रज अपने सिर पर लगायी और कहा कि ''महाराज ! मुझे माफ कर दो ।''

तो जो भगवद्रस में रहते हैं उन्हें संसार की सुख-सुविधाओं का महत्त्व नहीं रहता । भगवद्रस के

ऐसी ही घटनाएँ बापूजी के जीवन में भी घटी हैं ।

एक बार जब पूज्यश्री सब कुछ छोड़कर एक जंगल में दुर्गम स्थान पर जा के बैठ गये थे कि

सोचा मैं न कहीं जाऊँगा,
यहीं बैठकर अब खाऊँगा ।
जिसको गरज होगी आयेगा,
सृष्टिकर्ता खुद लायेगा ।।

ज्यों ही उनके मन में यह विचार आया त्यों ही सिर पर साफा बाँधे दो किसान हाथ में खाद्य-पेय लेकर वहाँ आ पहुँचे और पूज्यश्री के चरणों में प्रणाम करके बोले : ''महाराजजी ! स्वीकार करो ।''

पूज्यश्री बोले : ''भाई ! लगता है तुम लोग रास्ता भूल गये हो । यहाँ कोई तुम्हारे दूसरे महाराजजी रहते होंगे, जिनके लिए तुम खाद्य-पेय लेकर आये हो । यह उन्हें खिलाओ ।''

वे बोले : ''नहीं, यह सब हम आपके लिए ही लाये हैं । हमने रात को सपने में आपको जंगल में बैठे हुए देखा और साथ ही यहाँ पहुँचने का रास्ता भी । हमें ऐसी प्रेरणा हुई कि प्रातः जल्दी ही आपश्री की सेवा में पहुँच जाना चाहिए । हमारे गाँव में और कोई संत नहीं हैं ।''

पूज्य बापूजी के प्रवचनों में ऐसी ही एक अन्य घटना का उल्लेख मिलता है । पूज्यश्री के ही शब्दों में :)

आज से ४० साल पहले हम गंगोत्री गये थे । मैं था और मेरे साथ चार भक्त थे । उस समय गंगोत्री की गुफाओं में, पहाड़ियों में जाना बड़ा दुर्गम था । पैदल की यात्रा थी, वहाँ बसें नहीं जाती थीं । हम चलते-चलते

एक रात कहीं रुके फिर दूसरे दिन चले, दोपहर ढाई-तीन बजे के आसपास हम गंगोत्री पहुँचे। तो योग निकेतन के एक लम्बी जटाओंवाले, स्वस्थ, अच्छे ऊँचे कद के बड़े विलक्षण योगी महाराज सामने से आये, इशारा किया : 'खाने चलो, भोजन तैयार है।'

हम गये तो गरमागरम भोजन बना हुआ था, पहाड़ी हरी सब्जी तो चूल्हे पर सीझ रही थी। चावल, दाल, रोटी, हलवा बना था। उस साधु ने हमको परोसा। हमने खाया। साधु को हमने कहा : "स्वामीजी ! आप भी खाइये।" फिर उन्होंने खाया। वे मौनी संत थे। चेतनानंद या चेतन गिरि ऐसा कुछ नाम था।

हमने पूछा : "आपने इतना भोजन कैसे बना रखा था ? और इस समय गरमागरम भोजन ! हमारा आपका तो परिचय भी नहीं है।"

उन्होंने स्लेट पर लिख दिया कि 'बारहों महीने हम यहाँ रहते हैं। रोज १०.३०-११ बजे के बीच भोजन पा लेता हूँ। आज चावल बनाते-बनाते छः आदमी के बन गये। सब्जी बनाते-बनाते इतने आदमियों की बनाने की प्रेरणा मिली। फिर आटा निकाला तो आटा भी छः आदमी का गूँध लिया। भोजन बनाते-बनाते २-२.३० बज गये। मैंने सोचा, 'अब जब आटा तुम (ईश्वर) गुँधवाते हो, बनवाते हो तो खानेवाले आयेंगे।' मैंने बना के तैयार किया, हाथ धोकर बाहर देखा कि 'तू किसको भेजता है ?' तो देखा कि आप पाँच हैं, छठा मैं हूँ। मैं समझ गया कि आपके लिए हुआ है। हमने बुलाया और आपने पा लिया।'

तो ऐसा कौन है कि हम भूखे हैं, कब सामान खोलेंगे, कब लकड़ियाँ चुनेंगे, कब बनायेंगे - इसका खयाल रखकर इतने बड़े संत को प्रेरणा करता है ? ईश्वर कैसा ध्यान रखता है !

जब भी दुःख, चिंता आदि आयें तो विचारो कि 'उनको देखनेवाला कौन है ? मैं। मैं कौन हूँ ? मैं शरीर तो नहीं हूँ। मन, बुद्धि, अहंकार भी नहीं हूँ, इन सबको जाननेवाला हूँ। ॐ शांति... ॐ...' तो संसार के थपेड़ों से आप मुक्तात्मा होने लगेंगे। फिर आपका वह तत्त्वस्वरूप जो सर्वव्यापक परमात्मा है, उसका परम सुख और परम सामर्थ्य आपकी सेवा में लग जायेगा।

स्वास्थ्यवर्धक आँवला

आँवला एक ऐसा श्रेष्ठ फल है जो वात, पित्त व कफ तीनों दोषों का शमन करता है तथा मधुर, अम्ल, कड़वा, तीखा व कसैला इन पाँच रसों की शरीर में पूर्ति करता है । आँवले के सेवन से आयु, स्मृति, कांति एवं बल बढ़ता है । हृदय एवं मस्तिष्क को शक्ति मिलती है । आँखों के तेज में वृद्धि, बालों की जड़ें मजबूत होकर बाल काले होना आदि अनेकों लाभ होते हैं । शास्त्रों में आँवले का सेवन पुण्यदायी माना गया है । अतः अस्वस्थ एवं निरोगी सभीको आँवले का किसी-न-किसी रूप में सेवन करना ही चाहिए ।

आँवले के मीठे लच्छे

सामग्री : ५०० ग्राम आँवला, ५ ग्राम काला नमक, चुटकीभर सादा नमक, चुटकीभर हींग, ५०० ग्राम मिश्री, आधा चम्मच नींबू का रस, १५० ग्राम तेल ।

विधि : आँवलों को धोकर कद्दूकश कर लें । गुलाबी होने तक इनको तेल में सेंकें फिर कागज पर निकालकर रखें ताकि कागज सारा तेल सोख ले । इनमें काला नमक व नींबू का रस मिलाकर अलग रख दें । मिश्री की चाशनी बना के इनको उसमें थोड़ी देर पका लें । बस, हो गये आँवले के मीठे लच्छे तैयार ! इन्हें काँच के बर्तन में भरकर रख लें ।

पंचामृत रस

लाभ : यह अनुभूत रामबाण योग है, जो सर्दी के दिनों में तो विशेष लाभदायी है ।

(१) इससे पेट साफ रहता है ।

(२) रोगप्रतिकारक शक्ति बढ़ती है ।

(३) रक्तशुद्धि होती है एवं रक्तसंचरण भी सुचारु रूप से होने लगता है ।

(४) शरीर में स्फूर्ति बढ़ती है ।

(५) ओज-तेज की वृद्धि के लिए बहुत ही फायदेमंद है ।

(६) कोलेस्ट्रॉल के बढ़ने से होनेवाली बीमारियाँ, जैसे - हृदयरोग, मस्तिष्क के रोग, उच्च रक्तचाप आदि में लाभदायी है ।

विधि : १ किलो आँवला, १०० ग्राम कच्ची, ताजी हल्दी, १०० ग्राम ताजा अदरक, १०० ग्राम पुदीना, ५० से १०० तुलसी के पत्ते - पाँचों का रस निकालकर छान के मिला लें और काँच की बोतल में भर के ठंडे स्थान या फ्रिज में रखें । यह रस करीब ५ दिन टिक जाता है, फिर नया बना लें ।

मात्रा : रोज बोतल हिलाकर ५० मि.ली. रस सुबह खाली पेट लें (बच्चों के लिए आधी मात्रा) । पानी या शहद के साथ ले सकते हैं । कोलेस्ट्रॉल की समस्याओं में १०० ग्राम लहसुन का रस मिलाकर लेने से विशेष लाभ होता है ।

सरल और लाभकारी एक्यूप्रेशर चिकित्सा

हमारे शरीर में हाथों, पैरों तथा चेहरे पर एक्यूप्रेशर के प्रतिबिम्ब केन्द्र (ऌशषश्रशु लशपींशी) पाये जाते हैं, जिन्हें दबाने से शरीर में रोगप्रतिरोधक शक्ति जागृत होती है। एक्यूप्रेशर में इन केन्द्रों पर दबाव डाला जाता है। यह प्राकृतिक व प्रभावशाली चिकित्सा पद्धति है, जिसमें दबाव द्वारा बिल्कुल सुरक्षित इलाज हो जाता है और किसी प्रकारके नुकसान की सम्भावना भी नहीं होती। इसके अभ्यास से अनेक रोगों को दूर भी रखा जा सकता है।

आँखों के लिए : आँखों की किसी भी तकलीफ में दर्शाये गये मुख्य तथा सहायक बिंदुओं पर दबाव देने से लाभ होता है।

✲ मुख्य दबाव बिंदु : चित्रानुसार दोनों पैरों तथा हाथों में अँगूठे के साथवाली दो उँगलियाँ जहाँ तलवों तथा हथेलियों से क्रमशः मिलती हैं। (चित्र क्र. १ से ४)
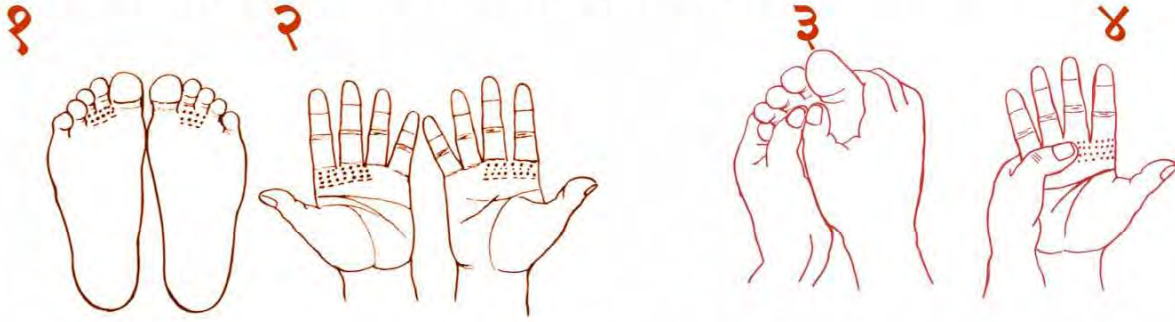
✲ सहायक दबाव बिंदु : दोनों पैरों तथा हाथों की सभी उँगलियों के अग्रभाग पर दबाव दें। (चित्र क्र. ५ व ६)

विशेष : इलाज के दौरान संबंधित बिंदु पर ४-५ सेकंड तक दबाव दें फिर १-२ सेकंड के लिए हटा लें। इस प्रकार प्रत्येक बिंदु पर सुबह-शाम १५ सेकंड से २ मिनट तक सहनशक्ति के अनुसार उपचार करें। इसके अलावा पलक झपकाकर आँखों की कसरत करना भी लाभदायी है। गम्भीर रोगों के लिए वैद्यकीय उपचार आवश्यक है। आँखों के साधारण रोग के उपचार में कुछ दिन तथा गम्भीर रोगों में कुछ महीने लग सकते हैं।
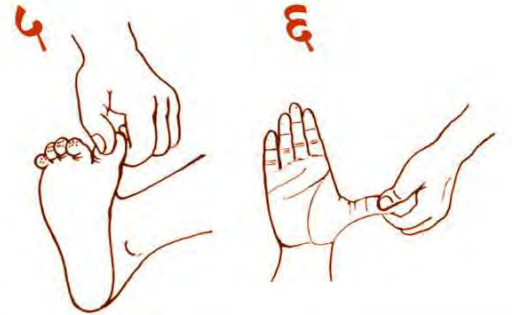
संस्कृति की अनमोल धरोहर

संसारदीर्घरोगस्य सुविचारो महौषधम्।
कोऽहं कस्य च संसारो विवेकेन विलोक्यते॥

संस्कृत देवभाषा है। हमारी प्राचीन धरोहर है। यह बात सिद्ध हो चुकी है कि कम्प्यूटर के लिए संस्कृत भाषा सबसे ज्यादा उपयुक्त है। हर प्रकार से देखें तो देश के विकास के लिए संस्कृत भाषा का ज्ञान अत्यंत आवश्यक है इसीलिए अमेरिका आदि कई देशों में संस्कृत-शिक्षा विशेष रूप से दी जा रही है। बड़े दुःख की बात है कि अपनी वैज्ञानिकता व उत्कृष्ट व्याकरण के कारण विदेशों में भी आदर पानेवाली तथा भारत के गौरवमय इतिहास की साक्षी रही संस्कृत भाषा का उसीके देश में अनादर हो रहा है। प्राचीन ऋषि-मुनियों के विलक्षण ज्ञान-विज्ञान को जानने-समझने का माध्यम एकमात्र संस्कृत भाषा ही है। यदि हमने इसका ज्ञान खो दिया तो हम हमारे ही पूर्वजों द्वारा संचित ज्ञान की अनमोल धरोहर से सदा के लिए वंचित हो जायेंगे। हमें विदेशी भाषाएँ सीखने-सिखाने से पहले संस्कृत भाषा को प्राथमिकता देनी चाहिए। इसके द्वारा हम भारतीय संस्कृति की सेवा में सहभागी हो सकेंगे।

प्रसव में विलम्ब होने पर प्रयुक्त उपचार

प्रसव पीड़ा कम या दूर करने के लिए उपयोग में आनेवाली पेनकिलर दवाएँ माता व बालक के बीच पय:पान (दुग्धपान) के समय स्नेह संबंध विकसित होने में बाधा पैदा करती हैं। संशोधकों ने देखा है कि पेनकिलर दवा लेने से माता में तरल मातृत्व हार्मोन ऑक्सिटोसिन स्रावित नहीं होता। इससे नवजात शिशु जन्म के समय चेतनाशून्य या स्तब्ध हो जाता है। यही कारण है कि वह अपने प्रारम्भिक क्षणों में माता के प्रति आकृष्ट नहीं होता और स्वतः पय:पान करने की कोशिश भी नहीं करता। इसके विपरीत जो माताएँ पेनकिलर दवा का सेवन नहीं करतीं, उनमें यह हार्मोन स्रावित होने से माता और बालक के बीच स्तनपान के हर अवसर पर दोनों ओर से प्रेम बढ़ता देखा गया है। अतः पेनकिलर दवाइयों का सेवन न करके निम्न उपचारों में से किसी भी एक का प्रयोग करें :

(१) स्वच्छ चारा खानेवाली देशी गाय के ताजे गोबर का एक चम्मच (१० मि.ली.) रस आसन्न प्रसवा (जिसकी प्रसूति का समय निकट आ गया हो) को पिलाने से प्रसव सुलभ हो जाता है।

(२) पीपर (पिप्पली) व वचा चूर्ण जल में पीसकर एरंड तेल के साथ मिला के नाभि में लेप करने से अनेक कष्टों से पीड़ित स्त्री भी सुखपूर्वक प्रसव करती है।

(३) सूर्यमुखी की जड़ को डोरी में बाँधकर प्रसूता के हाथ या सिर पर बाँधने से शीघ्र प्रसव होता है।

(४) प्रसूता के हाथ-पैर के नाखून व नाभि पर थूहर के दूध का लेप करें। (क्रमशः)

****

सबकी भरती हैं यहाँ झोलियाँ

दो साल पहले मेरे छोटे भाई प्रशांत का एक्सीडेंट हुआ था, जिसमें उसके बायें पैर के ऊपर से ट्रक गुजर गया था। पैर बुरी तरह से कुचल गया था। डॉक्टरों ने बोल दिया था कि 'अब पैर ठीक नहीं हो सकता।' पूज्य बापूजी में मेरी दृढ़ श्रद्धा थी परंतु मेरे भाई ने मंत्रदीक्षा नहीं ली थी। इसलिए मैंने उससे कहा : ''मैं तेरी तरफ से बड़बादशाह (पूज्य बापूजी द्वारा शक्तिपात किया हुआ वटवृक्ष) पर मन्नत मानता हूँ, तेरा पैर बिल्कुल ठीक हो जायेगा।'' मैंने प्रार्थना की। कुछ समय बाद मेरा भाई एकदम ठीक हो गया। अपने पैरों से चलकर आया और बड़दादा की परिक्रमा की।

सुबह परिक्रमा करते हुए उसने बड़दादा से एक मन्नत माँगी कि 'एक्सीडेंट के कारण मेरी जो नौकरी चली गयी थी, वही प्रमोशन के साथ वापस मिल जाय।' और आश्चर्य ! दोपहर को ही उस कम्पनी से फोन भी आ गया कि ''आप आज से ही नौकरी पर आ सकते हैं। आपका प्रमोशन किया जाता है, साथ ही आपका वेतन भी बढ़ाया जाता है।''

मेरा भाई बोलने लगा कि ''अभी मैंने दीक्षा भी नहीं ली है और मेरे साथ इतना चमत्कार हुआ है ! अगर मैं बापूजी से दीक्षा लेकर अपना जीवन आध्यात्मिक बना लूँ तो मेरे जीवन में कितने चमत्कार होंगे, उसकी मैं खुद भी कल्पना नहीं कर सकता !''

- भरत सोनी गांधीधाम, जि. कच्छ (गुज.), मो. : ९९०९९७५१९०

'निष्काम सेवायोग' का संदेश फैलाते बापूजी के शिष्य

गरीब-असहायों में अनाज, कपड़ा आदि वितरण व भंडारा

अहमदाबाद आश्रम द्वारा उदयपुर (राज.) के चिखला (मामेर) में जरूरतमंदों में कपड़े, मिठाई, अनाज, बर्तन, तुलसी गोलियों के पैकेट, चप्पल एवं 'नशे से सावधान' सत्साहित्य, कैलेंडर आदि का वितरण तथा विद्यार्थियों में नोटबुक-वितरण हुआ। यहाँ पर भगवन्नाम-कीर्तन व भंडारे का आयोजन भी हुआ।

हैदराबाद आश्रम द्वारा गुर्रेवुला जि. वरंगल (तेलंगाना) में गरीबों को भोजन कराया गया तथा कपड़े, कम्बल एवं मिठाई आदि का वितरण हुआ। यहाँ संकीर्तन यात्रा भी निकाली गयी एवं विद्यार्थियों को ओजस्वी-तेजस्वी बनाने हेतु 'विद्यार्थी शिविर' का आयोजन हुआ।

भावनगर (गुज.) के मानव सेवाश्रम में मंदबुद्धि व निराश्रितों में भंडारा हुआ। जयपटना, खुर्दा तथा कालाहांडी (ओड़िशा) में गरीबों में भोजन, कम्बल तथा प्रसाद का वितरण किया गया।

सोनपुर जि. नागपुर (महा.) में संकीर्तन यात्रा निकाली गयी और गरीबों में कम्बल व प्रसाद का वितरण किया गया।

धरमपुर जि. वलसाड (गुज.) के गरीबों में कम्बल, कपड़े, सत्साहित्य, कैलेंडर, नकद रुपयों आदि के वितरण के साथ ही कीर्तन यात्रा, हवन व भंडारे का आयोजन हुआ। सोमनहल्ली-बैंगलोर (कर्नाटक) में भंडारा हुआ तथा कम्बल, कपड़े आदि सामग्री का वितरण किया गया।

जोधपुर आश्रम में सामूहिक जपमाला-पूजन किया गया।

'जम्मू सत्संग-सुप्रचार सेवा मंडल' द्वारा झीड़ी मेले में सुप्रचार सामग्री का वितरण किया गया एवं निःशुल्क लंगर चलाया गया। दोंडाईचा (महा.) में 'भजन करो, भोजन करो, पैसा पाओ' योजना से लाभान्वित होनेवाले लोगों में १-१ किलो खजूर का वितरण किया गया।

कार्तिक पूर्णिमा को रायपुर (छ.ग.) आश्रम में १२१ दिनों से चल रहे श्री आशारामायण पाठ का हवन एवं भंडारे के साथ समापन हुआ तथा शहर में कीर्तन यात्रा निकाली गयी। शाजापुर, सुसनेर (म.प्र.), लखनऊ व रायपुर में गरीबों एवं जरूरतमंदों में विशाल भंडारे हुए।

जूनागढ़ (गुज.) में गिरनार पर्वत की परिक्रमा करनेवाले श्रद्धालुओं के लिए देवउठी एकादशी से देवदिवाली तक भंडारे का आयोजन किया गया। पिछले २० सालों से प्रतिवर्ष चल रही इस सेवा में रोज लगभग ३.५ हजार लोगों ने भोजन-प्रसाद पाया।

अनाज व फल वितरण

श्रीपाली भाटेल (ओड़िशा), इंदौर, सारनी, डेहरी जि. धार (म.प्र.), कुकनगर ग्रांट जि. गोण्डा (उ.प्र.), मालेगाँव, सिन्नर जि. नासिक, नागपुर, गोंदिया, प्रकाशा, बोईसर जि. ठाणे (महा.), गोधरा, वराछा-सूरत (गुज.), रतननगर जि. चुरू, आमेट (राज.) हैदराबाद, कोलकाता आदि आश्रमों में हर माह की तरह गरीबों में अनाज-वितरण एवं भंडारा हुआ। सीहोर (म.प्र.) में अनाज, मिठाई व सत्साहित्य वितरण हुआ।

अहमदाबाद के चांदखेड़ा में गरीबों में अनाज-वितरण व अस्पताल में फल-वितरण हुआ। साथ ही साबरमती के गरीबों में अनाज व खजूर बाँटे गये। भावनगर (गुज.) के सरकारी व आयुर्वेदिक अस्पतालों में फल बाँटे गये।

विविध सेवाकार्य

जगन्नाथपुरी (ओड़िशा) में पूज्य बापूजी के समर्थन में विशाल संत-सम्मेलन और सामूहिक प्रार्थना-सभा का आयोजन हुआ। भुवनेश्वर में आध्यात्मिक पुस्तक मेले में साधकों ने सत्साहित्य आदि द्वारा सुप्रचार किया तथा बच्चों ने बापूजी द्वारा प्रेरित 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' की एक नाटिका प्रस्तुत की।

बैंगलोर आश्रम द्वारा नि:शुल्क डायबिटीज कैम्प लगाया गया, जिसमें विशेषज्ञ चिकित्सकों ने इलाज किया।

लुधियाना (पंजाब) में निकाली गयी प्रभातफेरी में अपार जन-समूह सम्मिलित हुआ। इसमें विधायक सरदार रणजीत सिंह ढिल्लो और अकाली नेता डॉ. अश्विनी पासी भी सम्मिलित हुए। श्री रणजीत सिंह ने कहा : ''शीघ्र ही सत्य की जीत होगी और पूज्य बापूजी अपने शिष्यों के बीच सत्संग करेंगे।'' पूज्य बापूजी के उत्तम स्वास्थ्य के लिए हवन भी हुआ।

गाजियाबाद (उ.प्र.) में पिछले ४३३ दिनों से तथा भुवनेश्वर (ओड़िशा) में २३७ दिनों से सुप्रचार यात्राएँ लगातार चल रही हैं। जंतर-मंतर - दिल्ली में पिछले १ साल ३ महीने से धरना सतत चालू है।

उल्हासनगर (महा.) में श्मशान भूमि में संतों के श्रीचित्रों की प्रदर्शनी लगायी गयी तथा मृतात्माओं को सद्गति दिलानेवाले उपायों से युक्त सत्साहित्य एवं तुलसी पौधों के साथ प्रसाद का वितरण किया गया। नासिक एवं गोरेगाँव-मुंबई में जपमाला-पूजन किया गया एवं ऋषि प्रसाद सेवादारों में स्मृतिचिह्नों का वितरण किया गया। चन्द्रपुर (महा.) में संत-सम्मेलन का आयोजन किया गया।

परतवाड़ा (महा.), आमेट (राज.), जालंधर (पंजाब) में युवा सेवा संघ द्वारा 'युवा मार्गदर्शन सेमीनार' का आयोजन हुआ, जिसमें नवयुवकों को ब्रह्मचर्य व संयम-सदाचार पर मार्गदर्शन दिया गया। **(शेष पृष्ठ ४२ पर)**

एक शतक का नाम आधे में ही पूरा काम

मैं बीमारी के कारण लगातार छः महीने तक बहुत परेशान रहा । मलद्वार से रक्तस्राव के कारण शरीर में कमजोरी आ गयी थी । मैंने कई अंग्रेजी व आयुर्वेदिक दवाइयाँ लीं पर कोई लाभ नहीं हुआ।

एक दिन आश्रम के एक भाई ने कहा कि आप 'ऋषि प्रसाद' की सेवा में जुट जाइये । मुझे याद आया कि बापूजी भी कहते हैं कि 'जो दूसरों की सेवा में लग जाते हैं, उनके अपने दुःख टिकते नहीं ।' मैंने भी दुःखियों के दुःख, रोगियों के रोग, शोकग्रस्तों के शोक, चिंतितों की चिंता दूर करनेवाली 'ऋषि प्रसाद' पत्रिका के १०० सदस्य बनाने का संकल्प ले लिया और सेवा में जुट गया। आश्रम जाकर बड़दादा की २१ परिक्रमा की और पूज्य बापूजी से प्रार्थना की। ५० सदस्य ही बने थे कि (एक शतक का नाम, आधे में ही पूरा काम) मेरी बीमारी अपने-आप ठीक हो गयी। यह चमत्कार 'ऋषि प्रसाद' की सेवा से ही हुआ है।

अब मैं अपने सम्पर्क में आनेवाले बच्चों को 'दिव्य प्रेरणा-प्रकाश' तथा 'ऋषि प्रसाद' पढ़ने को देता हूँ ताकि वे भी तन-मन के रोगों से बचें और भवरोग से छूट जायें। क्योंकि मेरे बापूजी की शरण में जो आते हैं -

उनका योग क्षेम वे रखते, वे न तीन तापों से तपते ।।
धर्म कामार्थ मोक्ष वे पाते, आपद रोगों से बच जाते ।

- ओमप्रकाश चौहान, बिलाड़ा, जि. जोधपुर (राज.),मो. : ९२६९१४२९३४

****

(पृष्ठ ४१ का शेष) महिला उत्थान मंडल द्वारा कठुआ (जम्मू-कश्मीर), लुधियाना व सूरत में 'महिला सर्वांगीण विकास शिविर' का आयोजन हुआ।

पूज्य बापूजी के उत्तम स्वास्थ्य एवं शीघ्र रिहाई के लिए केसरापल्ली आश्रम (ओड़िशा) में अखंड २४ प्रहरी हरिनाम संकीर्तन का आयोजन हुआ।

देवास (म.प्र.) तथा कुचिंदा जि. सम्बलपुर (ओड़िशा) के जेल में पूज्यश्री का विडियो सत्संग-कार्यक्रम व सत्साहित्य, फल-प्रसाद आदि का वितरण हुआ।

****

ज्ञान-प्रेम-माधुर्य का महासागर सनातन धर्म

- पूज्य बापूजी

दुनिया के हर प्राचीन धर्म ने, दुनिया के हर सुलझे हुए सम्प्रदाय व कई प्रबुद्ध महापुरुषों ने और राजा-महाराजाओं ने जिसको सहर्ष स्वीकार किया और अनुभूतियाँ की हैं; सारी पृथ्वी पर और स्वर्ग में ही नहीं अपितु अतल, वितल, तलातल, रसातल, महातल, जनलोक, भूवर्लोक, तपलोक आदि अन्य लोकों पर भी जिसका साम्राज्य छाया हुआ है, वह सार्वभौम ब्रह्मांडव्यापी धर्म है 'सनातन धर्म'।

भिन्न-भिन्न देश, काल और परिस्थिति के अनुसार पृथक्-पृथक् धर्म बने हैं किंतु सनातन धर्म सम्पूर्ण मानव-जाति के विकास का मार्ग प्रशस्त करता है । सनातन सत्य रूपी धर्म जीवमात्र के भीतर, हर दिल में धड़कनें ले रहा है। सनातन सत्य हर दिल में छुपी हुई परमात्मा की वह सुषुप्त शक्ति है, जिसके जागृत होने से मनुष्य का सर्वांगीण विकास होता है, पूर्ण आत्मिक विकास होता है । जितने अंश में मानव सनातन सत्य के निकट होता है, उतने अंश में उसका जीवन मधुर होता है। जितने अंश में उसका सनातन सत्य से संबंध जुड़ता है, जितने अंश में अपनी सुषुप्त शक्तियाँ सनातन चेतना से प्राप्त करता है, उतने अंश में वह अपने क्षेत्र में उन्नत होता है। यह एक हकीकत है कि मनुष्य जितना-जितना 'देह' को सत्य मानकर संकीर्ण कल्पनाएँ रचता है, उतना-उतना सच्चे सुख से दूर होता जाता है । आज का मनुष्य शरीर के भोगों में, बड़ी-बड़ी सुख-सुविधाओं से सम्पन्न महलों में रहने में, भौतिक ऐश-आरामों में रचे-पचे रहने में ही सच्चा सुख मान बैठा है और उसे ही प्राप्त करने में अपना सारा समय बरबाद कर देता है। फलस्वरूप वह अपने आत्मा-परमात्मा के ज्ञान से वंचित ही रह जाता है।

भगवन्नाम की तुमुल ध्वनि से उत्पन्न आध्यात्मिक स्पंदनों द्वारा वातावरण को दिव्य आभा से समृद्ध बनाती हुई प्रभातफेरियों एवं हरिनाम संकीर्तन यात्राओं में जुड़ता व्यापक जनसमुदाय।

जोधपुर | इंदौर | जनकपुर (नेपाल) | लुधियाना (पंजाब)

प्रयागराज | बाराँ (राज.) | बाड़मेर (राज.) | सतना (म.प्र.)

एटा (उ.प्र.) | आगरा | भुवनेश्वर | गाजियाबाद

अमरावती (महा.) | मथुरा (उ.प्र.) | जयपुर | कोटा (राज.)

रायपुर (छ.ग.) | केसरापल्ली (ओड़िशा) | सिरोही (राज.) | जयपटना (ओड़िशा)

देहरादून (उत्तराखंड) | भिलाई, जि. दुर्ग (छ.ग.) | प्रकाशा (महा.) | अमृतसर (पंजाब)

पूज्य बापूजी द्वारा प्रेरित 'योग व उच्च संस्कार शिक्षा' कार्यक्रमों में शरीर को स्वस्थ व सुदृढ़ बनाने तथा स्मरणशक्ति, बुद्धिशक्ति एवं मनोबल विकसित करने के प्रयोग सीखकर जीवन को महान बनाने की प्रेरणा पाते छात्र-छात्राएँ।

RNP. No. GAMC 1132/2012-14
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2014)
Licence to Post without Pre-payment.
WPP No. 08/12-14
(Issued by CPMG UK. valid upto 31-12-2014)
RNI No. 48873/91
DL (C)-01/1130/2012-14
WPP LIC No. U (C)-232/2012-14
MH/MR-NW-57/2012-14
'D' No. MR/TECH/47.4/2014
Date of Publication: 1st Dec 2014

योग व उच्च संस्कार शिक्षा कार्यक्रम

बीरगाँव, जि. रायपुर (छ.ग.) | केन्दुप्रदरपाड़ा, जि. गंजाम (ओड़िशा) | करावल नगर-दिल्ली

राजकोट (गुज.) | बैंगलोर | कुवाँ, जि. डूँगरपुर (राज.) | हैदराबाद

सातारा (महा.) | कैथल (हरि.) | खड़गदा, जि. डूँगरपुर (राज.) | रायपुर (छ.ग.)

सागवाड़ा (राज.) | घुघरियाखेड़ी, जि. खरगोन (म.प्र.) | रामनगर, जि. आणंद (गुज.) | सागर (म.प्र.)

बाड़मेर (राज.) | पाटन, जि. सीहोर (म.प्र.) | जालंधर (पंजाब) | बापूनगर-अहमदाबाद

जबलपुर (म.प्र.) | बेगुनियाँपाड़ा, जि. गंजाम (ओड़िशा) | राउरकेला (ओड़िशा) | कटनी (म.प्र.)

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/sewa देखें।

आश्रम, समितियाँ एवं साधक परिवार अपने सेवाकार्यों की तस्वीरें sewa@ashram.org पर ई-मेल करें।

Posting at Dehradun G.P.O. between 6th to 23rd of every month. * Posting at ND PSO on 18th & 19th of E.M. * Posting at MBI Patrika Channel on 24th & 25th of E.M.

आस-पड़ोस के विद्यालयों, महाविद्यालयों, मंदिरों आदि में मातृ-पितृ पूजन दिवस के प्रचार के लिए पुस्तक, स्टीकर, पोस्टर, फ्लैक्स-बैनर, विवरण पुस्तिका, डीवीडी उपलब्ध हैं।

सम्पर्क : बाल संस्कार विभाग, अहमदाबाद
फोन : (०७९) ३९८७७७४९/५०/५१